विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

www.vishwahindi.com

वर्ष: 10 | अंक: 38 | जून, 2017

केंद्रीय हिंदी संस्थान का 'हिंदी सेवी सम्मान' समारोह

30 मई, 2017 को राष्ट्रपति भवन, दिल्ली में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा वर्ष 2015 के लिए *'हिंदी सेवी सम्मान'* समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा 12 पुरस्कार श्रेणियों के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करनेवाले 26 हिंदी सेवियों को सम्मानित किया गया। *पृ. 3*

मॉरीशस में 'कथाकार प्रेमचंद का रचना-कौशल' विषयक एक-दिवसीय संगोष्ठी

15 जून, 2017 को महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के सुब्रमण्यम् भारती सभागार में *'कथाकार प्रेमचंद का रचना-कौशल'* विषय पर एक-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह संगोष्ठी संस्थान के हिंदी और उर्दू विभागों की संयुक्त पहल रही, जिससे हिंदी और उर्दू भाषाओं और उनके साहित्य के बीच सेतु को सुदृढ़ किया जा सके। मॉरीशस में माध्यमिक और तृतीयक स्तर पर हो रहे प्रेमचंद साहित्य-शिक्षण को नई दिशा प्रदान करना भी इस संगोष्ठी का उद्देश्य था। *पृ. 4*

बुडापेस्ट में 7वां अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं संस्कृति सम्मेलन

7 जून, 2017 को अमृता शेरगिल कला-केंद्र, आई.सी.सी.आर. के सभागार, हंगरी, बुडापेस्ट में विश्व हिंदी साहित्य परिषद्, भारत के तत्वावधान में *'7वां अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं संस्कृति सम्मेलन'* का आयोजन किया गया। *पृ. 5*

मॉरीशस में राष्ट्रीय हिंदी नाटक समारोह 2017

सन् 2017 के मई-जून महीने में कला एवं संस्कृति मंत्रालय द्वारा हिंदी नाटक समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस वर्ष नाटक समारोह 13 दिनों तक चला। प्रतियोगिता में 12 कॉलिज, 1 प्राथमिक स्कूल तथा 9 क्लबों ने भाग लिया। अंतिम चरण में *'अशोक की चिंता'* नाटक के लिए वाक्वा रंगभूमि कला मंदिर को प्रथम पुरस्कार, *'सबसे बड़ा रुपय्या'* नाटक के लिए प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल कॉलिज को द्वितीय पुरस्कार एवं *'भंवर'* नाटक के लिए नाट्य दीप को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। *पृ. 6*

आगे देखें :

- मॉरीशस में हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा द्विदिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी — *पृ. 5*
- केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा दो-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी — *पृ. 5*
- हिंदू गर्ल्स कॉलिज, मॉरीशस में हिंदी दिवस — *पृ. 6*
- आधुनिक शंघाई के इतिहास में पहली बार हिंदी नाटक का मंचन — *पृ. 8*
- हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस का 91वां स्थापना-दिवस — *पृ. 8*
- 17 वर्षीय अमेरिकी-भारतीय इशान प्रसाद द्वारा हिंदी सीखने हेतु 'मेच इट अप' एप की रचना — *पृ. 15*
- विश्व हिंदी सचिवालय का नया प्रकाशन : 'विश्व हिंदी साहित्य' के लिए रचनाएँ आमंत्रित — *पृ. 16*
- अंतरराष्ट्रीय हिंदी एकांकी प्रतियोगिता की घोषणा — *पृ. 16*
- विश्व हिंदी पत्रिका 2017 के लिए शोध-आलेख आमंत्रित — *पृ. 16*

ISSN 1694-2485

स्वागतम्

डॉ. माधुरी रामधारी, उपमहासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस

डॉ. माधुरी रामधारी ने 3 मई, 2017 से विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के उपमहासचिव का पदभार संभाला। इससे पूर्व डॉ. रामधारी महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस में वरिष्ठ व्याख्याता के रूप में कार्यरत थीं। संस्थान में आपने सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग की अध्यक्षा के रूप में भी कार्य किया है। संस्थान द्वारा प्रकाशित दो त्रैमासिक हिंदी पत्रिकाएँ 'वसंत' एवं 'रिमझिम' की आप मुख्य संपादक रहीं। 1995-2005 तक आप माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण के साथ जुड़ी रहीं। हिंदी शिक्षण एवं शोध-कार्य के क्षेत्र में आपने उल्लेखनीय कार्य किए हैं। पी.एच.डी. के स्तर पर आपका शोध मॉरीशसीय हिंदी नाट्य साहित्य पर केंद्रित है। आपने स्थानीय रेडियो पर कई सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से सचिवालय में उपमहासचिव डॉ. माधुरी रामधारी का हार्दिक स्वागत है।

माननीय श्री कलराज मिश्र द्वारा सचिवालय के निर्माण-स्थल का दौरा

फ़ेनिक्स, मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय के मुख्यालय का निर्माण-कार्य सुचारु रूप से आगे बढ़ रहा है। अपनी मॉरीशस यात्रा के दौरान भारत गणराज्य के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग मंत्री, माननीय श्री कलराज मिश्र ने 13 मई, 2017 को विश्व हिंदी सचिवालय के निर्माण-स्थल का दौरा किया। माननीय मंत्री जी ने निर्माण-कार्य की प्रगति को देखते हुए संतोष व्यक्त किया। इस अवसर पर मॉरीशस गणराज्य की शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री, माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन, मॉरीशस के भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अभय ठाकुर, शिक्षा मंत्रालय के वरिष्ठ मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री राम प्रकाश रामलगन तथा शिक्षा मंत्रालय एवं भारतीय उच्चायोग के अधिकारी गण उपस्थित थे।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

देश के सभी विश्वविद्यालयों में जल्द लागू होगा सामान्य हिंदी-शिक्षण-योजना

देश भर के विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थाओं को जल्द ही संसदीय पेनल के सुझाव के बाद एक सामान्य हिंदी-शिक्षण-योजना लागू करनी पड़ सकती है। वैसे जहाँ हिंदी विभाग नहीं है, उन संस्थानों को भी विभाग शुरू करने को कहा जा सकता है। सभी शिक्षण संस्थानों को हिंदी के लिए एक न्यूनतम स्तर नियत करने को भी कहा जा सकता है। इसके अलावा अहिंदी राज्यों में पढ़नेवाले छात्रों को जहाँ हिंदी में परीक्षा देने की अनुमति नहीं है, उन जगहों पर छात्रों को अपनी मातृभाषा में उत्तर लिखने की अनुमति देनी होगी। फिर भी कुछ जगहों पर इस फ़ैसले की निंदा भी हुई और कई कॉलिजों के छात्रों ने राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के पास हिंदी को ज़बरदस्ती पाठ्यक्रम में लागू करने को लेकर याचिका भी लिखी। इसके जवाब में राष्ट्रपति ने कहा ***''उच्च शिक्षा में स्वायत्ता देने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा कुछ कानून बनाए गए हैं, जिसके तहत कुछ उच्च शिक्षण संस्थानों में, अंग्रेज़ी ही निर्देश का माध्यम है। इस बाबत देश के हर हिस्से में एक सामान्य नीति का अनुसरण करना चाहिए।''*** मानव संसाधन विकास मंत्रालय को इसको लेकर एक कार्य योजना भी तैयार करनी चाहिए और इसके लिए ज़रूरी कानून बनाने की प्रक्रिया आरंभ कर संसद में पेश भी करना चाहिए तथा जिन संस्थानों में हिंदी नहीं है, वहाँ हिंदी विभाग तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। इसके अतिरिक्त संसदीय पेनल ने यह भी कहा कि जो संस्थान स्वेच्छापूर्वक हिंदी पढ़ाते हैं, उनको मिलनेवाला अनुदान बहुत कम है, इसके लिए ज़रूरी कदम उठाने चाहिए।

साभार : अमरउजाला.कॉम

आधिकारिक भाषाओं पर संसदीय समिति की सिफ़ारिश स्वीकृत

राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने 'आधिकारिक भाषाओं पर संसदीय समिति' की सिफ़ारिश को स्वीकार कर लिया है कि राष्ट्रपति सहित सभी मंत्रियों व अधिकारियों को हिंदी में ही भाषण देना चाहिए और ऐसे बयान जारी करना चाहिए, जिस हिंदी को सभी पढ़-बोल सकें। प्रधान-मंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी तथा उनकी मंत्री-परिषद् के ज़्यादातर मंत्री मुख्य तौर पर हिंदी में भाषण देते हैं।

6 साल पहले आधिकारिक भाषाओं पर संसदीय समिति ने हिंदी को और लोकप्रिय बनाने के तरीकों पर 117 सिफ़ारिशें दी थीं। उनपर केंद्र ने राज्यों के साथ गहन विचार-विमर्श किया था। श्री मुखर्जी का कार्यकाल समाप्त होने से पहले अगर इस निर्णय को लागू किया जाए, तो संभवत: अगले राष्ट्रपति को केवल हिंदी में ही भाषण देना पड़ेगा। अन्य सिफ़ारिशों पर भी स्वीकृति दी गई, जैसे 'एयर इंडिया की टिकटों पर हिंदी', 'सभी सरकारी एवं अर्द्ध-सरकारी कंपनियों व संगठनों को अपने उत्पादों के नाम हिंदी में बताने होंगे','गैर हिंदी-भाषी राज्यों के विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों को परीक्षाओं व साक्षात्कारों में हिंदी में उत्तर देने का विकल्प दिया जाए', 'सरकार सरकारी संवाद में कठिन हिंदी शब्दों के उपयोग से बचे और हिंदी शब्दों के अंग्रेज़ी लिप्यंतरण के एक शब्दकोश की तैयारी' हो।

साभार : नवभारत टाइम्स

केंद्रीय हिंदी संस्थान का 'हिंदी सेवी सम्मान' समारोह

30 मई, 2017 को राष्ट्रपति भवन, दिल्ली में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा वर्ष 2015 के लिए 'हिंदी सेवी सम्मान' समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा 12 पुरस्कार श्रेणियों के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करनेवाले 26 हिंदी सेवियों को सम्मानित किया गया। समारोह में मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री प्रकाश जावड़ेकर तथा अन्य गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे।
केंद्रीय हिंदी संस्थान ने सन् 1989 में 'हिंदी सेवी सम्मान' योजना का आरंभ किया था। वर्ष 2015 के लिए दिए गए सम्मान इस प्रकार हैं:

हिंदी प्रचार-प्रसार एवं हिंदी प्रशिक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु 'गंगाशरण सिंह पुरस्कार'	
प्रो. एस. शेषारत्नम् (विशाखापट्नम)	डॉ. एम. गोविन्द राजन (चेन्नई)
प्रो. हरमहेन्द्र सिंह बेदी	प्रो. एच. सुबदनी देवी (मणिपुर)
हिंदी पत्रकारिता तथा जनसंचार के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु 'गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार'	
श्री बलदेव भाई शर्मा (गाज़ियाबाद)	श्री राहुल देव (हरियाणा)
विज्ञान, चिकित्सा-विज्ञान एवं अभियांत्रिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु 'आत्माराम पुरस्कार'	
डॉ. गिरीश चन्द्र सक्सैना (आगरा)	डॉ. फणी भूषण दास (बिहार)
सर्जनात्मक एवं आलोचनात्मक क्षेत्र में उल्लेखनीय लेखन-कार्य हेतु 'सुब्रह्मण्यम् भारती पुरस्कार'	
प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित (लखनऊ)	श्रीमती चंद्रकांता (हरियाणा)
हिंदी माध्यम से ज्ञान के विविध क्षेत्र तथा पर्यटन व पर्यावरण से संबंधित क्षेत्र में मौलिक अनुसंधान हेतु 'महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार'	
श्रीमती चित्रा मुद्गल (दिल्ली)	डॉ. जयप्रकाश कर्दम (दिल्ली)
विदेशी हिंदी विद्वान को विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं लेखन में उल्लेखनीय कार्य हेतु 'डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन पुरस्कार'	
प्रो. ताकेशि फुजिइ (जापान)	प्रो. गाब्रिएला निक. इलिएवा (न्यू यॉर्क)
आप्रवासी भारतीय विद्वान को विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं लेखन-कार्य हेतु 'पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार'	
डॉ. पुष्पिता अवस्थी (नीदरलैंड)	डॉ. पद्मेश गुप्त (लंदन)
कृषि-विज्ञान एवं राष्ट्रीय एकता के क्षेत्र में उल्लेखनीय लेखन-कार्य हेतु 'सरदार वल्लभ भाई पटेल पुरस्कार'	
डॉ. बी. आर. छीपा (रजस्थान)	श्री दयाप्रकाश सिन्हा (नोएडा)
मानविकी एवं कला, संस्कृति एवं विचार की भारतीय चिंतन परंपरा के क्षेत्र में उल्लेखनीय लेखन-कार्य हेतु 'दीनदयाल उपाध्याय पुरस्कार'	
डॉ. महेश चंद्र शर्मा	डॉ. राकेश सिन्हा (दिल्ली)
भारतविद्या (इंडोलॉजी) के क्षेत्र में विशेष योगदान हेतु 'स्वामी विवेकानंद पुरस्कार'	
श्री श्रीधर गोविन्द पराडकर (ग्वालियर)	डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव (बिहार)
शिक्षा-शास्त्र एवं प्रबंधन में हिंदी माध्यम से उल्लेखनीय लेखन-कार्य हेतु 'पंडित मदन मोहन मालवीय पुरस्कार'	
प्रो. नित्यानंद पाण्डेय (असम)	श्री जगदीश प्रसाद सिंघल (राजस्थान)
विधि एवं लोक-प्रशासन के क्षेत्र में हिंदी भाषा में उल्लेखनीय लेखन-कार्य हेतु 'राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन पुरस्कार'	
प्रो. शिवदत्त शर्मा (उत्तराखंड)	प्रो. अशोक कुमार शर्मा (राजस्थान)

सम्मानितों में डॉ. एम. गोविन्दराजन ने अपनी पुरस्कार-राशि निर्धन बच्चों के विज्ञान शिक्षण एवं कल्याण हेतु दान करने की घोषणा की। श्री श्रीधर पराडकर ने अपनी पुरस्कार-राशि अखिल भारतीय परिषद् को प्रदान की तथा डॉ. राकेश सिन्हा ने अपनी पुरस्कार-राशि निर्धन विद्यार्थियों की पढ़ाई हेतु दान की। इन विद्वानों की नि:स्वार्थ सेवा अत्यन्त सराहनीय है।
विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से सम्मानित विद्वानों को हार्दिक बधाई।

साभार : राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली

‘कथाकार प्रेमचंद का रचना-कौशल’ विषयक एक-दिवसीय संगोष्ठी

15 जून, 2017 को महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के सुब्रमण्यम् भारती सभागार में *‘कथाकार प्रेमचंद का रचना-कौशल’* विषय पर एक-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह संगोष्ठी संस्थान के हिंदी और उर्दू विभागों की संयुक्त पहल रही, जिससे हिंदी और उर्दू भाषाओं और उनके साहित्य के बीच सेतु को सुदृढ़ किया जा सके। मॉरीशस में माध्यमिक और तृतीयक स्तर पर हो रहे प्रेमचंद साहित्य-शिक्षण को नई दिशा प्रदान करना भी इस संगोष्ठी का उद्देश्य था।

समारोह के मुख्य अतिथि भारतीय उप उच्चायुक्त, महामहिम श्री अशोक कुमार रहे, जिन्होंने प्रेमचंद साहित्य को नए युग के नए परिदृश्य में देखने की आवश्यकता पर बल दिया। संस्थान की महानिदेशिका श्रीमती सूर्यकान्ति गयान, जी.ओ.एस.के. तथा भारतीय भाषा संकाय के प्रमुख एसोसिएट प्रोफ़ेसर चेमेन ने भी दोनों भाषाओं तथा उनके साहित्य के बीच निरंतर संवाद की बात की। कार्यक्रम के आरंभ में उर्दू विभागाध्यक्ष, डॉ. रामताली ने स्वागत-वक्तव्य दिया। संगोष्ठी तीन अकादमिक सत्रों में चली, जिनमें ‘प्रेमचंद का कथ्य’, ‘वैचारिक पृष्ठभूमि’ तथा ‘प्रासंगिकता’ पर चर्चा हुई। तीन सत्रों के अंतर्गत राष्ट्रीय उर्दू परिषद् के निदेशक प्रो. सैयद अली करीम, आई.सी.सी.आर. हिंदी चेयर प्रो. उमेश कुमार सिंह तथा लखनऊ विश्वविद्यालय से प्रो. पवन अग्रवाल ने क्रमश: अध्यक्षता की व आलेख भी प्रस्तुत किए। संस्थान की ओर से सुश्री अंजलि चिंतामणि, डॉ. अहमद रहमतअलि, डॉ. अलका धनपत, सुश्री रोशिदा माराय, डॉ. कृष्ण कुमार झा, श्रीमती सकीना रसमाली आदि हिंदी एवं उर्दू प्राध्यापकों ने प्रेमचंद के साहित्य के अनेकानेक आयामों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। समारोह में विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र व उपमहासचिव डॉ. माधुरी रामधारी, हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री यन्तुदेव बुधु, महात्मा गांधी संस्थान के अलग-अलग विभागों के अध्यक्ष एवं प्राध्यापक, प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूलों के शिक्षक, हिंदी और उर्दू विद्वान, विभिन्न संस्था-अध्यक्षों, लेखकों तथा छात्रों की उपस्थिति रही। डॉ. विनय गुदारी ने मंच संचालन किया तथा हिंदी विभागाध्यक्ष, श्री गुलशन सुखलाल ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

डॉ. विनय गुदारी की रिपोर्ट

मॉरीशस में द्विदिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

15-16 अप्रैल, 2017 को हिंदी भवन, लोंग माउंटेन, मॉरीशस में हिंदी प्रचारिणी सभा तथा भारतीय उच्चायोग मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में एक द्विदिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी *‘वर्तमान युग में मानक हिंदी के स्वरूप तथा उसकी उपयोगिता’* विषय पर आधारित था। इस अवसर पर रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्यप्रदेश, भारत के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल को आमंत्रित किया गया था।

उद्घाटन-समारोह में वित्तीय सेवा, उचित शासन तथा संस्थागत सुधार मंत्री, माननीय श्री धरमेंद्र शिवशंकर, भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अभय ठाकुर, शिक्षा मंत्रालय की प्रतिनिधि श्रीमती घूरा, विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र तथा सरकारी हिंदी अध्यापक संघ के प्रधान श्री सत्यदेव टेंगर सहित कई गण्यमान्य अतिथि व हिंदी के कर्मठ सेवक उपस्थित थे। प्रथम सत्र में प्रो. शुक्ल ने *‘भाषा चिंतन की परंपरा’*, डॉ. (श्रीमती) नूतन पाण्डेय ने *‘हिंदी भाषा का मानकीकृत रूप’* तथा डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी झमन ने *‘मानक भाषा की विशेषताएँ’* तथा द्वितीय सत्र में डॉ. जयचंद लालबिहारी ने *‘उच्चारण त्रुटियाँ और आर्थी विचलन’* एवं सुश्री अंजलि चिंतामणि ने *‘त्रुटि विश्लेषण और निदानात्मक शिक्षा’* विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के दूसरे दिन, श्री राज हीरामन ने *‘साहित्य और मीडिया में हिंदी का मानकीकरण’* विषय पर प्रस्तुति की। दोनों दिनों के सत्रों के दौरान सभागार में उपस्थित शिक्षकों, छात्रों, अभिभावकों तथा भिन्न-भिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधिगण के प्रश्नों, प्रतिक्रियाओं, विचारों एवं सुझावों का स्वागत किया गया तथा प्रो. शुक्ल ने भाषा व व्याकरण से संबंधित कई जानकारियाँ दीं। समापन-समारोह में मुख्य अतिथि प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने हिंदी प्रचारिणी सभा को उक्त अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के सफल आयोजन हेतु बधाई दी तथा आह्वान किया कि मानक हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित किया जाए।

श्री यंतुदेव बुधु की रिपोर्ट

केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा दो-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

20-21 अप्रैल, 2017 को केंद्रीय हिंदी संस्थान के सूचना एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग में *'भाषा प्रौद्योगिकी एवं इ-शिक्षण (द्वितीय एवं विदेशी भाषा के रूप में हिंदी का संदर्भ)'* विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रथम दिन के प्रथम सत्र का उद्घाटन केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के उपाध्यक्ष, प्रो. कमल किशोर गोयनका ने दीप-प्रज्ज्वलन के साथ किया तथा स्वागत-वक्तव्य केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक, प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय ने दिया। उन्होंने कहा कि ***''भाषा प्रौद्योगिकी विभाग में भाषा-प्रयोगशाला के लिए नवीनतम सॉफ़्टवेयर एवं हार्डवेयर उपलब्ध कराए गए हैं, जिसपर छात्र उच्चारण एवं वर्तनी का अभ्यास कर अपनी हिंदी को सुदृढ़ कर सकेंगे।''*** कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जे.एन.यू. के विशिष्ट संस्कृत अध्ययन-केंद्र के अध्यक्ष, प्रो. जी. एन. झा ने अपने वक्तव्य में इ-लर्निंग और इ-कंटेंट में अंतर स्पष्ट करते हुए कहा कि लर्निंग मेनेजमेंट सिस्टम का काम कंटेंट की मॉनिटरिंग करना है, इसमें आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस का समन्वय भी होता है। विशिष्ट अतिथि के रूप में कन्हैयालाल माणिक मुंशी हिंदी विद्यापीठ के निदेशक, प्रो. प्रदीप श्रीधर ने अपने वक्तव्य में संस्थान की गतिविधियों की जानकारी दी और वर्तमान में इ-शिक्षण में प्रयोग की जा रही तकनीक की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। अंत में, संगोष्ठी के संयोजक, प्रो. देवेंद्र शुक्ल ने सभी आमंत्रित विद्वानों एवं आगंतुकों का आभार व्यक्त किया। प्रो. कमल किशोर गोयनका ने अध्यक्षीय उद्बोधन में इंटरनेट की उपयोगिता पर बात की। प्रो. जगन्नाथन ने अपने बीज-वक्तव्य में कहा कि ***''सूचना प्रौद्योगिकी अंकीय सूचनाओं का संसाधन करती है। भाषा के अंकीय संसाधन से हम भाषा संबंधी उपयोगी कार्यक्रमों का निर्माण कर सकते हैं। इ-शिक्षण का प्रयोग भाषा-शिक्षण को व्यापक बनाने में बहुत महत्वपूर्ण है।''*** भाषा-प्रशिक्षण के बदलते परिवेश के संदर्भ में उन्होंने दूरस्थ शिक्षा के लोकतांत्रीकरण की चर्चा की। प्रथम दिन के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान के पूर्व प्रोफ़ेसर अश्विनी कुमार श्रीवास्तव ने की। इसमें कानपुर विश्वविद्यालय से डॉ. योगेंद्र प्रताप सिंह ने *'भाषा प्रौद्योगिकी, इ-शिक्षा : सीमाएँ एवं संभावनाएँ'* विषय पर, डॉ. सुभाष चंद्र, जे.एन.यू. ने *'वेब आधारित इ-शिक्षण उपकरणों के माध्यम से भाषा-शिक्षण में संगणकीय भाषाविज्ञान की भूमिका'* पर, डॉ. नरेंद्र मिश्र, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर ने *'भाषा प्रौद्योगिकी एवं इ-शिक्षण'* पर, डॉ. नवीन नंदवाना, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, जोधपुर ने *'प्रौद्योगिकी व हिंदी भाषा-शिक्षण'* पर, डॉ. देवेंद्र कुमार सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय ने *'सूचना-आधारित समाज के निर्माण में प्रौद्योगिकी की भूमिका'* पर, डॉ. पुनीत बिसारिया, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय ने *'हिंदी शिक्षण में इ-माध्यमों की भूमिका'* विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। सत्र का संचालन डॉ. ज्योत्सना रघुवंशी तथा प्रो. देवेंद्र शुक्ल ने किया।

दूसरे दिन के तृतीय एवं चतुर्थ संयुक्त सत्र का अध्यक्षीय उद्घाटन प्रो. विनीत सिंह ने किया। अपने उद्घाटन में उन्होंने सभी आलेख प्रस्तुतकर्ताओं के विचारों का समाहार किया। इन सत्रों के दौरान वाराणसी से डॉ. वंदना झा, अलीगढ़ विश्वविद्यालय से डॉ. पल्लव विष्णु और शांतिनिकेतन से डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी ने अपने विचार व्यक्त किए। के. एम. आई. के भाषाविज्ञान-विभाग से डॉ. रीतेश कुमार और केंद्रीय हिंदी संस्थान की कॉर्पोरा परियोजना के श्री केशरीनंदन ने अपने संयुक्त शोध-पत्र में ऑटोमैटिक स्कोरिंग को निबंध के स्तर पर जांचने की संभावनाओं पर प्रकाश डाला तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा तैयार किए जा रहे हिंदी वर्तनी परीक्षक टूल का प्रदर्शन भी किया। संचालन डॉ. सपना गुप्ता ने किया।

5वें सत्र की अध्यक्षता अहमदाबाद से डॉ. संजीव दुबे ने की। इस सत्र के अंतर्गत लखनऊ विश्वविद्यालय से डॉ. श्रुति ने *'भाषा-शिक्षण में न्यू मीडिया की भूमिका'*, डॉ. दर्शन पांडेय ने *'वैकल्पिक न्यू मीडिया का शैक्षिक उपयोग'*, डॉ. ज्योत्सना रघुवंशी ने *'हिंदी कॉर्पोरा : प्रयास और उपलब्धियाँ'*, डॉ. अनुपम श्रीवास्तव ने *'इ-शिक्षण, संप्रेषण और मल्टीमीडिया प्रस्तुतियों का सुरुचि-सौंदर्यशास्त्र'*, डॉ. चंद्रकांत कोठे ने *'द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी के संदर्भ में इ-शिक्षण एवं अधिगम'* विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। सत्र का संचालन केंद्रीय हिंदी संस्थान के डॉ. चंद्रकांत कोठे ने किया।

6ठें व अंतिम सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय और विशिष्ट अतिथि प्रो. अश्विनी कुमार श्रीवास्तव थे। समापन-सत्र का समाहार वक्तव्य विभागाध्यक्ष, प्रो. देवेंद्र शुक्ल ने दिया। प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय ने हिंदी के प्रौद्योगिकी विकास के लिए चौदह सूत्रीय रोड-मैप प्रस्तुत किया। इस संगोष्ठी में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों से आमंत्रित विद्वज्जन के अतिरिक्त आगरा और आसपास के क्षेत्रों के शिक्षण-संस्थानों से आए प्राध्यापक एवं शोधार्थी उपस्थित थे। संचालन श्री अनुपम श्रीवास्तव ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन श्री केशरी नंदन ने किया।

साभार : केंद्रीय हिंदी संस्थान का वेबसाइट

बुडापेस्ट में 7वां अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं संस्कृति सम्मेलन

7 जून, 2017 को अमृता शेरगिल कला केंद्र, आई.सी.सी.आर. के सभागार, हंगरी, बुडापेस्ट में विश्व हिंदी साहित्य परिषद्, भारत के तत्वावधान में 7वां अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं संस्कृति सम्मेलन का आयोजन किया गया।

प्रथम सत्र का उद्घाटन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हंगरी में भारतीय राजदूत, महामहिम श्री राहुल छाबड़ा द्वारा किया गया। सत्र के अध्यक्ष डॉ. हरीश नवल ने अध्यक्षीय उद्बोधन में हिंदी की वैश्विक स्थिति पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इस सत्र के दौरान भारत के कई विख्यात चित्रकारों की चित्रकला प्रदर्शनी लगाई गई। इस अवसर पर एल्ते विश्वविद्यालय से हंगरी की प्रसिद्ध हिंदी विद्वान डॉ. मरिया नेज्येशी, विख्यात व्यंग्यकार डॉ. हरीश नवल, वरिष्ठ शिक्षाविद् एवं कवि डॉ. लल्लन प्रसाद, मॉरीशस में भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव डॉ. नूतन पांडेय, अमृता शेरगिल कला केंद्र, आई.सी.सी.आर., भारतीय दूतावास, बुडापेस्ट के निदेशक श्री टी. पी. एस. रावत, प्रसिद्ध पत्रकार श्री ए. के. अग्रवाल, हिंदी पीठ आई.सी.सी.आर. से डॉ. दिलीप शाक्य जैसे विद्वानों की उपस्थिति रही।

द्वितीय सत्र के अंतर्गत 'सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से हिंदी कल, आज और कल' विषय पर विभिन्न प्रतिभागियों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. स्नेह सुधा नवल रहीं तथा अध्यक्षता प्रसिद्ध लेखिका डॉ. मीनाक्षी जोशी ने की। विशिष्ट अतिथियों में डॉ. आनंद कुमार सिंह, डॉ. गुरमीत सिंह, डॉ. मीना शर्मा तथा वक्ता डॉ. सीमा रानी और डॉ. नूतन पांडेय ने विषय के संदर्भ में नवीन उद्भावनाओं एवं संभावनाओं की ओर संकेत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। लेखक डॉ. राजेश श्रीवास्तव ने सत्र का संचालन किया।

तृतीय सत्र में अंतरराष्ट्रीय कविता उत्सव का आयोजन किया गया। इस सत्र के मुख्य अतिथि कवि श्री प्रेम भारद्वाज 'ज्ञानभिक्षु' रहे तथा अध्यक्षता डॉ. धनन्जय सिंह ने की। इस अवसर पर 7 देशों से आमंत्रित कवियों ने काव्य-पाठ किया।

चतुर्थ सत्र में अंतरराष्ट्रीय नृत्य-कला उत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें कलाकारों द्वारा नृत्य एवं गायन-कला का प्रदर्शन हुआ।

समापन-सत्र में विशिष्ट अतिथियों के कर-कमलों द्वारा सभी प्रतिभागियों को 'साहित्य सिंधु', 'कला सिंधु', 'हिंदी गौरव सम्मान' एवं 'साहित्य गौरव सम्मान' से सम्मानित किया गया। इस सम्मेलन में भारत, हंगरी, अमेरिका, कनाडा, बेल्जियम और स्विट्ज़रलैंड से आए 72 प्रतिभागियों ने भाग लिया। विश्व हिंदी साहित्य परिषद् के अध्यक्ष, डॉ. आशीष कंधवे ने संचालन तथा धन्यवाद-ज्ञापन किया।

विश्व हिंदी साहित्य परिषद् की रिपोर्ट

मॉरीशस में राष्ट्रीय हिंदी नाटक समारोह 2017

सन् 2017 के मई-जून महीने में कला एवं संस्कृति मंत्रालय, मॉरीशस द्वारा हिंदी नाटक समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस वर्ष नाटक समारोह 13 दिनों तक चला। प्रतियोगिता हेतु कुल 25 आवेदन प्राप्त हुए और प्रथम चरण के लिए 22 नाटक प्रस्तुत किए गए। राष्ट्रीय नाटक प्रतियोगिता में 12 कॉलिज, 1 प्राथमिक स्कूल तथा 9 क्लबों ने भाग लिया।

प्रथम चरण रिव्येर जी रॉंपार युवा केंद्र, मोंटाय ब्लॉंश युवा केंद्र और सेर्ज़ कोंस्ताँतें थिएटर वाक्वा में संपन्न हुआ।

29 जून 2017 को वाक्वा के सेर्ज़ कोंस्ताँतें थिएटर में प्रतियोगिता के अंतिम चरण का आयोजन किया गया। अंतिम चरण के लिए तीन श्रेष्ठ नाटक चुने गए - *'अशोक की चिंता'* (वाक्वा रंगभूमि कला मंदिर), *'भंवर'* (नाट्य दीप, वाले दे प्रेत) एवं *'सबसे बड़ा रुपय्या'* (प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल कॉलिज, फ़्लाक)। जूरी के सदस्यों में श्री सूर्यदेव सिबोरत, श्री धननारायण जीऊत और श्री धनराज शम्भु थे।

अंतिम चरण में *'अशोक की चिंता'* नाटक के लिए **वाक्वा रंगभूमि कला मंदिर** को **प्रथम पुरस्कार**, *'सबसे बड़ा रुपय्या'* नाटक के लिए **प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल कॉलिज** को **द्वितीय पुरस्कार** एवं *'भंवर'* नाटक के लिए **नाट्य दीप** को **तृतीय पुरस्कार** प्राप्त हुए। साथ ही, *'अशोक की चिंता'* नाटक के लिए **श्री राजेश्वर सितोहल** को *'श्रेष्ठ निर्देशक'*, **डॉ. कुमारदत्त गुदारी** को *'श्रेष्ठ अभिनेता'* एवं *'श्रेष्ठ स्थानीय लेखक'*, **देवन्ती सितोहल** को *'बेस्ट सेटिंग'* तथा *'सबसे बड़ा रुपय्या'* नाटक के लिए **ऋषिका जद्दू** को *'श्रेष्ठ अभिनेत्री'* और **नोट्र डाम कॉलिज, क्यूर्पिप** को *'बेस्ट बिगिनर ग्रुप'* पुरस्कार प्रात हुए।

राष्ट्रीय हिंदी नाटक समारोह 2017 के लिए विश्व हिंदी सचिवालय तथा इंडिपेंडेंट कमिशन एगेन्स्ट करप्शन मॉरीशस द्वारा पुरस्कार प्रायोजित किए गए। इंडिपेंडेंट कमिशन एगेन्स्ट करप्शन ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध मंचित नाटक को विशेष पुरस्कृत किया। इसके विजेता काँ दे मास्क पावे के *'नवरंग कला'* रहे। दूसरी ओर विश्व हिंदी सचिवालय ने 3 श्रेष्ठ नाटकों *'अशोक की चिंता'*, *'सबसे बड़ा रुपय्या'* तथा *'भंवर'* को क्रमशः 5000, 3000 और 2000 के नकद पुरस्कार प्रदान किए।

यह समारोह एक प्रतियोगिता के रूप में मनाया जाता है, जिसमें राष्ट्रीय स्तर पर प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूल, धार्मिक संस्थाएँ, क्लब आदि भाग लेते हैं। प्रतिभागिता के लिए उम्र की कोई सीमा निर्धारित नहीं की जाती। इस समारोह का मुख्य उद्देश्य नाटक मंचन द्वारा हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करना, नाट्य-कला को बढ़ावा देना, युवकों को मंच पर अभिव्यक्ति करने का सुअवसर प्रदान करना तथा हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच को जीवित रखना है।

श्री राकेश श्रीकिसुन की रिपोर्ट

हिंदू गर्ल्स कॉलिज, मॉरीशस में हिंदी दिवस

5 मई, 2017 को हिंदू गर्ल्स कॉलिज, मॉरीशस में हिंदी दिवस भव्य रूप से मनाया गया। हिंदू गर्ल्स कॉलिज सन् 1945 में 'वैदिक विद्यालय' के नाम से स्थापित हुआ था। इसका उद्देश्य विशेष रूप से लड़कियों को विद्या प्रदान करना है और हिंदू संस्कृति को बढ़ावा देना है। हिंदी भाषा का पठन-पाठन करना तथा अनुशासन को कायम रखना इस कॉलिज की प्राथमिकताएँ हैं। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कॉलिज कई वर्षों से हिंदी दिवस मनाता आ रहा है। इस वर्ष दीप-प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती-वन्दना के साथ कार्यक्रम का श्रीगणेश हुआ। समारोह की मुख्य अतिथि भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव डॉ. नूतन पाण्डेय रहीं। डॉ. पाण्डेय ने *'हिंदी और नौकरी की संभावना'* विषय पर वक्तव्य देते हुए छात्राओं को हिंदी सीखने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के आरंभ में हिंदी विभागाध्यक्षा, श्रीमती रामभरत ने हिंदी दिवस के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभागाध्यक्ष व वरिष्ठ व्याख्याता श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने हिंदी भाषा पढ़ने की आवश्यकता पर बल दिया। समारोह के दौरान हिंदी दिवस से पूर्व आयोजित भाषण-प्रतियोगिता के विजेताओं ने अपना प्रस्तुतीकरण किया। इस अवसर पर छात्राओं द्वारा रामचरितमानस-गायन, पारंपरिक वैवाहिक लोक गीत, कविता व कहानी-पाठ, नाटक तथा काव्य-रस पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति हुई। इस अवसर पर विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव, प्रो. विनोद कुमार मिश्र और महात्मा गांधी माध्यमिक पाठशाला, सेंट जॉज़ेफ कॉलिज तथा रॉयल कॉलिज के छात्र और हिंदू गर्ल्स कॉलिज के नवें ग्रेड की छात्राओं के अभिभावक भी उपस्थित थे।

श्री राजेश कुमार उदय की रिपोर्ट

ब्रिटेन में हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता

6 मई, 2017 को ब्रिटेन में भारतीय उच्चायोग, लंदन के सहयोग से यू.के. हिंदी समिति द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दिव्या माथुर विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। इस आयोजन को दो वर्गों में बाँटा गया था। एक में लिखित परीक्षा हुई तथा दूसरे में भाषण-प्रतियोगिता हुई। कार्यक्रम के संचालक यू.के. हिंदी समिति के संरक्षक, डॉ. पद्मेश गुप्त ने कहा कि इस प्रतियोगिता का उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी न केवल हिंदी पढ़ें, बल्कि ठीक ढंग से बातचीत और उच्चारण भी कर सकें। भाषण-प्रतियोगिता में 5 से 40 वर्ष की आयु तक के छात्रों ने भाग लिया, जिनके विषय थे- 'बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद', 'करेला नीम चढ़ा', 'लड़का अच्छा या लड़की', 'यदि मैं एक दिन के लिए माँ/पिता होती/होता' आदि। कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन श्रीमती सुरेखा चोफ़्ला ने किया।

दिव्या माथुर की रिपोर्ट

जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के शोध-छात्रों द्वारा एक दिवसीय संगोष्ठी

12 अप्रैल, 2017 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के शोध-छात्रों द्वारा विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग सभागार में *'जनपक्षधरता और फ़णीश्वर नाथ रेणु का साहित्य'* विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के अंतर्गत आयोजित सत्रों में *'रेणु की कथाओं में जनसरोकारों का चरित्र'* एवं *'पत्रकार रेणु और उसकी जनपक्षधारिता'* विषय पर चर्चा हुई। सत्रों की अध्यक्षता क्रमश: प्रो. हेमलता महेश्वर, प्रो. चंद्रदेव यादव, प्रो. अब्दुल बिस्मिल्लाह और प्रो. प्रेम सिंह ने की तथा प्रो. नित्यानंद तिवारी व प्रो. प्रेम तिवारी, दिल्ली विश्वविद्यालय के विवेकानंद कॉलिज की प्रो. सरिता तिवारी तथा कश्मीर विश्वविद्यालय के प्रो. नायरा कुरैशी सहित प्रेम भारद्वाज व डॉ. वैभव कुमार विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। प्रो. मुकेश मिरोठा ने समापन-वक्तव्य दिया और हैदराबाद विश्वविद्यालय, कश्मीर विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय व जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा शोध-पत्रों की प्रस्तुति हुई।

साभार : एशिया टाइम्स

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में विश्व रंगमंच दिवस

27 मार्च, 2017 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के प्रदर्शनकारी कला विभाग द्वारा गालिब सभागार में **विश्व रंगमंच दिवस** का आयोजन किया गया, जिसमें शेक्सपियर का *'माकबेथ'*, भारतेंदु हरिश्चंद्र का *'अंधेर नगरी'*, ग्रीक का *'इडिपस'* एवं भास का *'दूतवाक्यम्'* आदि नाटकों का सफल मंचन हुआ। नाट्य प्रस्तुतियों की परिकल्पना, समन्वय एवं निर्देशन सहायक प्रो. सुरभि विप्लन का था तथा निर्माण व संयोजन वरिष्ठ रंगकर्मी सहायक प्रो. सतीश पावड़े का था। नाट्यमंचन के अवसर पर कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र, प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, डॉ. उषा शर्मा, साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. के. के. सिंह सहित अध्यापक, अधिकारी एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित थे।

बी. एस. मिरगे की रिपोर्ट

मॉरीशस में 'हिंदी वैश्विक है' विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

15-20 मई, 2017 को ले ग्राँ ब्लु होटल, त्रु ओ बिश, मॉरीशस में मॉरीशस के हिंदू एसोसिएशन तथा भारत के पश्चिमांचल हिंदी प्रचार समिति, बड़ौदा के संयुक्त तत्वावधान में *'हिंदी वैश्विक है'* विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि मॉरीशस के कला एवं संस्कृति मंत्री, माननीय श्री पृथ्वीराज रूपन तथा भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अभय ठाकुर रहे। समारोह का उद्घाटन विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित भारत के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग मंत्री, माननीय श्री कलराज मिश्र ने किया, जिन्होंने दोनों देशों के बीच सुदृढ़ होते संबंध पर बल देते हुए मॉरीशस में हिंदी और भोजपुरी में हो रहे विकास पर हर्ष व्यक्त किया। इस अवसर पर बड़ौदा से 10 प्रतिनिधि-गण आए हुए थे। आई.सी.सी.आर. के हिंदी चेयर, डॉ. उमेश सिंह ने हिंदी की वैश्विकता पर प्रकाश डाला। आर्य सभा के मंत्री, श्री सत्यदेव प्रीतम ने बड़ौदा में जन्मे मणिलाल डॉक्टर की मॉरीशस में हिंदी सेवा के इतिहास पर बात की। सरकारी हिंदी अध्यापक संघ के प्रधान, श्री सत्यदेव टेंगर ने भी अपने विचार व्यक्त किए। धन्यवाद-ज्ञापन श्री सुरेश रामबरन ने किया।

श्री राज हीरामन की रिपोर्ट

सरकार को विदेशी भाषा भाषांतरकारों की आवश्यकता

17 अप्रैल, 2017 को भारत के विदेश मंत्रालय के समिति-कक्ष, नई दिल्ली में एक बैठक का आयोजन किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संचालित विभिन्न विदेशी भाषाओं के विद्यार्थियों तथा भाषांतरकारों से मुलाकात करना, हिंदी माध्यम से विदेशी भाषा भाषांतरकार के कार्य की आवश्यकता से रूबरू कराना एवं भविष्य में हिंदी तथा संबंधित विदेशी भाषा में भाषांतरकारों के प्रशिक्षण-कार्य को सुनिश्चित करना था। विदेश मंत्री, माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज ने बताया कि विदेश मंत्रालय को हिंदी माध्यम से विदेशी भाषा के अनुवाद, दुभाषिया एवं भाषांतरकारों की अत्यन्त आवश्यकता है। उन्होंने सभी शिक्षक एवं विद्यार्थियों के साथ स्वतंत्र रूप से चर्चा की। उन्होंने कुछ वाक्य हिंदी में देते हुए उनसे विदेशी भाषाओं में मौखिक अनुवाद कराया। बैठक में विदेश मंत्रालय के भाषांतरकार और भाषा-विशेषज्ञ भी उपस्थित थे, जिन्होंने विदेश मंत्रालय को *'किस प्रकार के भाषांतरकार चाहिए'* तथा *'उनका प्रशिक्षण किस प्रकार होना चाहिए'* इसके बारे में सुझाव दिए तथा भविष्य में विश्वविद्यालय में अरबी व रूसी भाषा का पाठ्यक्रम शुरू करने का प्रस्ताव रखा। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. मिश्र ने सभी को आभार व्यक्त करते हुए विश्वविद्यालय में आवश्यक सुविधाओं के बारे में चर्चा की, जिसके प्रत्युत्तर में विदेश मंत्री ने सहायता हेतु आश्वासन दिया। बैठक में विदेश सचिव श्री एस. जयशंकर, संयुक्त सचिव श्री राजेश वैष्णव, ओ.एस.डी. (हिंदी), विदेश मंत्रालय में पदनियुक्त संबंधित विदेशी भाषा विशेषज्ञ तथा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यलय, वर्धा के विभिन्न सहायक प्रोफ़ेसर, अनिबार्ण घोष (चीनी), संनति जैन (जापानी), संदीप कुमार (फ्रेंच) सहित 8 विद्यार्थी उपस्थित थे।

बी. एस. मिरगे की रिपोर्ट

पत्रकारिता और समाज पर दो-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

10-11 अप्रैल, 2017 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में जनसंचार विभाग द्वारा पत्रकारिता और समाज पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रथम दिन के उद्‍घाटन-सत्र में हिंदी भाषा, पत्रकारिता और समाज पर चर्चा की गयी, जिसमें मानविकी एवं समाज-विज्ञान संकाय के अध्यक्ष, प्रो. मनोज कुमार ने स्वागत-भाषण दिया। अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित 'दैनिक भास्कर' के संपादक मणिकांत सोनी ने पत्रकारिता के अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि हिंदी भाषा, पत्रकारिता और समाज एक त्रिकोण है और पाठक उसके केंद्र में है।
दूसरे दिन विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. गिरिश्वर मिश्र ने समापन-सत्र की अध्यक्षता की। प्रसिद्ध पत्रकार श्री राहुल देव ने मुख्य वक्ता के रूप में मीडिया पर बात की। संगोष्ठी में पत्रकार, शोधार्थी तथा पत्रकारिता के विद्यार्थी उपस्थित थे।

साभार : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

आधुनिक शंघाई के इतिहास में पहली बार हिंदी नाटक का मंचन

22 अप्रैल, 2017 को शंघाई में प्रसिद्ध नाटककार मोहन राकेश की कृति *'आषाढ़ का एक दिन'* का सफल मंचन किया गया। आधुनिक शंघाई के इतिहास में यह पहला अवसर था, जब किसी हिंदी नाटक का मंचन किया गया। अपनी मिट्‌टी और संस्कारों से प्रेम करनेवालों के साथ हिंदी साहित्य और रंगमंच में रुचि रखनेवालों के लिए शंघाई रंगमंच की ओर से यह पहली प्रस्तुति थी। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित शंघाई कौंसलावास प्रमुख, श्री प्रकाश गुप्ता ने कलाकारों की तारीफ़ करते हुए कहा कि काफ़ी साल पहले उन्होंने इस कृति को पढ़ा ज़रूर था। लेकिन वर्षों बाद शंघाई में इसका मंचन देखकर मन हर्षित हो उठा। नाटक के निर्देशक एवं कालिदास की भूमिका निभानेवाले श्री मुकेश शर्मा ने कहा ***''गैर हिंदी प्रदेश के लोग, जिन्होंने कभी रंगमंच के लिए काम नहीं किया, वैसे कलाकारों के साथ संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कृत नाटक के मंचन का फ़ैसला उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती थी। टीम के ज़्यादातर सदस्य विभिन्न निजी कंपनियों में बड़ी ज़िम्मेदारी निभा रहे हैं, ऐसे में सप्ताह के दिनों में उनके साथ सिर्फ़ स्काइप पर ही अभ्यास संभव हो पाया।''*** नाटक में प्रियंका जोशी, अमित वायकर, अमित मेघणे, धनश्री एवं अर्पणा वायकर ने क्रमानुसार मल्लिका, मातुल, आर्य विलोम, अंबिका व राज वधू की भूमिका निभाते हुए दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया। सहयोगियों के साथ वितरण तथा व्यवस्था की ज़िम्मेदारी निभा रही श्रीमती बीना वाघले ने कहा कि ग़ैर हिंदी दर्शकों को हिंदी रंगमंच के लिए रंगशाला तक खींचकर लाना चुनौतीपूर्ण कार्य था, लेकिन सबके मिले-जुले प्रयास से यह कार्य भी सरल हो गया। इस अवसर पर शंघाई रंगमंच अकादमी (विदेश रंगमंच विभाग) के उपाध्यक्ष, प्रो. यूउ, भारतीय संघ, शंघाई के प्रमुख श्री राज खोसा, श्री तुषार भानुशाली तथा श्रीमती अनीता शर्मा सहित कई हिंदी व अहिंदी-भाषी लोग उपस्थित थे। अंत में, चीन की राजधानी बीजिंग एवं व्यावसायिक शहर ग्वांगजौ से इसके मंचन का आग्रह, हिंदी रंगमंच के लिए सुनहरे सफ़र का आगाज़ है।

साभार : हिंदी सी.आर.आई. सी.एन.

जम्मू में माइक्रोसॉफ़्ट भाषा उत्सव

3-4 मई, 2017 को जम्मू के केंद्रीय विश्वविद्यालय के सहयोग से माइक्रोसॉफ़्ट भाषा उत्सव का आयोजन किया गया। दोनों दिन दो सत्र हुए, जिनमें प्रतिभागियों के लिए भाषायी संदर्भों में नई तकनीक के साथ जुड़ने का यह एक मौका था। इस अवसर पर कार्यक्रम में सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। विश्वविद्यालय की ओर से जनसंचार विभागाध्यक्ष, प्रो. गोविंद सिंह और माइक्रोसॉफ़्ट की ओर से लोकलाइज़ेशन लीड, श्री बालेंदु शर्मा दाधीच ने आयोजकीय दायित्व संभाले। समारोह में छात्रों और शिक्षकों ने भाग लिया।

आभार : श्री बालेंदु शर्मा दाधीच

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में अज्ञेय स्मरण कार्यक्रम

13 अप्रैल, 2017 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग द्वारा *'अज्ञेय स्मरण कार्यक्रम'* का आयोजन किया गया, जिसका शुभारंभ शोधार्थी गजेंद्र पाण्डेय के कविता-गायन से हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने अज्ञेय के समग्र साहित्य पर प्रकाश डाला तथा मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित प्रो. देवराज, अनुवाद व निर्वचन विद्यापीठ के अधिष्ठाता ने अज्ञेय के साहित्य सहित उनके पत्रकारीय कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित भाषा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल एवं साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. कृष्ण कुमार सिंह सहित आवासीय लेखक श्री शंकरलाल पुरोहित तथा कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम में अध्यापक गण, अधिकारी गण, शोधार्थियों व विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में विदेशी विद्यार्थियों के लिए आयोजित स्पर्धाओं के पुरस्कारों का वितरण भी हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रीति सागर ने किया तथा आभार-ज्ञापन डॉ. बीरपाल सिंह ने किया।

बी. एस. मिरगे की रिपोर्ट

हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस का 91वाँ स्थापना-दिवस

17 जून, 2017 को हिंदी भवन, लोंग माउंटेन, मॉरीशस में हिंदी प्रचारिणी सभा का 91वाँ स्थापना-दिवस मनाया गया। समारोह के प्रथम सत्र में प्रसिद्ध साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर ने साहित्यकार श्री धनराज शम्भु के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अपना अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया।
दूसरे सत्र में कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भारतीय उच्चायोग मॉरीशस की द्वितीय सचिव डॉ. श्रीमती नूतन पाण्डेय मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने समारोह की अध्यक्षता की। कार्यक्रम में भारत से आए प्रो. पवन अग्रवाल ने भी अपनी उपस्थिति दी। स्वागत-भाषण हिंदी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष, श्री यन्तुदेव बुधु ने दिया। कार्यक्रम में श्री राज हीरामन और अन्य नवोदित कवियों ने काव्य-पाठ किया। समारोह में मॉरीशस के प्रमुख साहित्य सेवी, विद्वज्जन और हिंदी प्रेमी उपस्थित थे। कवि-सम्मेलन का संचालन महात्मा गांधी संस्थान के वरिष्ठ प्रवक्ता डॉ. विनय गुदारी ने किया।

डॉ. श्रीमती नूतन पाण्डेय का फ़ेसबुक पृष्ठ

बिहार में अनूदित हिंदी संग्रह 'एक सावित्री की मौत' का लोकार्पण

8 मई, 2017 को विश्व अंगिका महासभा द्वारा स्थानीय भगवान पुस्तकालय के सभागार में लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकार डॉ. अमरेंद्र की अंगिका कहानियों का वसुंधरा राजे द्वारा अनूदित हिंदी संग्रह *'एक सावित्री की मौत'* का लोकार्पण किया गया। समारोह का उद्‌घाटन करते हुए मुख्य अतिथि के रूप में मंचासीन आदरणीय शिवकुमार सिंह ने डॉ. अमरेंद्र के संपूर्ण साहित्य-सेवा को रेखांकित किया। सभा की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ साहित्यकार दिनेश तपन ने अनुवादक वसुंधरा राजे को महासभा की ओर से बधाई देते हुए कहा कि अब अंगिका के विस्तार का द्वार खुल गया है। मुख्य वक्ता डॉ. प्रदीप प्रभात ने हिंदी भाषा की प्रगति में अंगिका जैसे जनपदीय भाषा के योगदान की विस्तार से चर्चा की। अतिथियों का स्वागत भगवान पुस्तकालय के प्रभारी डॉ. आनंद कुमार झा बल्लो ने किया। इस अवसर पर डॉ. अजीत कुमार सोनू, श्री सुधीर कुमार, डॉ. विजय कुमार मिश्र, श्री नीरज कुमार सिंह, श्री रोहित मिश्र, श्री महेंद्र मयंक, श्री कपिल देव ठाकुर, श्री भूपेंद्र मंडल, श्री प्रेम चंद्र पांडे, श्री मनोज गीता, श्री जगदीश यादव, श्री अभय कुमार भारती, श्री मनोहर कुमार, श्री अवधेश कुमार, श्री सुशील कुमार विशिष्ट अतिथि के रूप में तथा कई साहित्यकार एवं साहित्य-प्रेमी उपस्थित थे। मंच-संचालन गीतकार राजकुमार ने किया।

साभार : स्वर्णिम टाइम्स इपेपर

डॉ. संध्या जैन के काव्य-संग्रह 'संवाद' का लोकार्पण

26 जून, 2017 को श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति के शिवाजी भवन सभागार, इंदौर में डॉ. संध्या जैन के काव्य-संग्रह *'संवाद'* का लोकार्पण किया गया। वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. योगेंद्रनाथ शुक्ल ने डॉ. संध्या जैन के संकलन पर बात करते हुए जीवन की गहराइयों से जुड़ी रचनाओं पर प्रकाश डाला। डॉ. संध्या जैन ने अपने लेखन के बारे में संक्षेप में प्रकाश डाला। इस अवसर पर सर्वश्री सत्यनारायण सत्तन, प्रभु त्रिवेदी, डॉ. चन्द्रा सायता, चन्द्रसेन विराट, सूर्यकान्त नागर, राकेश शर्मा, अंजुल कंसल, डॉ. पुष्पारानी गर्ग, सन्तोष मोहन्ती, मुकेश इन्दौरी, डॉ. पद्मासिंह और अन्य गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे। समारोह का संचालन संस्था के अध्यक्ष श्री हरेराम वाजपेयी ने किया तथा सचिव श्री प्रदीप नवीन ने आभार व्यक्त किया।

हिंदी परिवार संस्था, इंदौर की रिपोर्ट

बीकानेर में डॉ. नीरज दइया की पुस्तक 'बुलाकी शर्मा के सृजन-सरोकार' का लोकार्पण

1 मई, 2017 को होटल 'ढोला मारू' के सभागार, बीकानेर में मुक्ति संस्थान एवं स्वामी कृष्णानंद फ़ाउंडेशन बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में कवि-आलोचक डॉ. नीरज दइया की पुस्तक *'बुलाकी शर्मा के सृजन-सरोकार'* का लोकार्पण संपन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि नाटककार व कवि लक्ष्मीनारायण रंगा तथा विशिष्ट अतिथि रंगकर्मी आनंद वी. आचार्य रहे। श्री लक्ष्मीनारायण रंगा ने कहा कि डॉ. नीरज दइया ने बुलाकी शर्मा के साहित्यिक अवदान का आकलन करते हुए एक परिचयात्मक परिदृश्य प्रस्तुत किया तथा वर्तमान साहित्य की सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि मूल्यांकन नहीं हो रहा। श्री आनंद वी. आचार्य ने बुलाकी शर्मा के नाटक *'समय निरंतर'* पर विस्तार से चर्चा की। कार्यक्रम में फ़ाउंडेशन के अध्यक्ष हिंगलाज दान रतनू, समालोचक-शिक्षाविद् डॉ. उमाकांत गुप्त, कहानीकार श्री बुलाकी शर्मा तथा वरिष्ठ साहित्यकार श्री भवानी शंकर व्यास 'विनोद' ने डॉ. नीरज दइया की पुस्तक पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. दइया ने कहा कि ***''किसी भी समकालीन और निरंतर सृजनरत सक्रिय लेखक पर लिखना जोखिम भरा काम होता है, क्योंकि वह संभावनाओं से भरा होता है।''*** साथ ही, साहित्यकार डॉ. ब्रज रतन जोशी, कवि नवनीत पाण्डे, लेखक श्री नदीम अहमद नदीम, साहित्यकार कमल रंगा एवं श्री देवकृष्ण शर्मा ने प्रसंगों को साझा किया। कार्यक्रम में कई साहित्यकारों की उपस्थिति रही। समारोह का संचालन साहित्यकार राजेन्द्र जोशी ने किया तथा आभार-ज्ञापन श्री राजाराम स्वर्णकार ने किया।

साभार : अजमेरनामा.कॉम

डॉ. संगीता सक्सेना कृत 'गढ़ रे मन गढ़' काव्य-संग्रह का लोकार्पण

28 मई, 2017 को 'स्पंदन महिला साहित्यिक एवं शैक्षणिक संस्थान' के पिंकसिटी प्रेस क्लब, जयपुर में डॉ. संगीता सक्सेना कृत *'गढ़ रे मन गढ़'* काव्य-संग्रह का लोकार्पण किया गया। तीन वरिष्ठ साहित्यकार - श्री नन्द भारद्वाज, डॉ. सुदेश बत्रा तथा डॉ. कुसुम शर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अध्यक्षता डॉ. नरेंद्र शर्मा कुसुम ने की। कृति-चर्चा के अंतर्गत समीक्षक डॉ. आशा शर्मा ने पुस्तक का सूक्ष्म विवेचन किया तथा लखनऊ से डॉ. विजय कुमार सक्सेना ने अपने विचार व्यक्त किए। संस्थान की अध्यक्षा, श्रीमती नीलिमा टिक्कू ने सभी का स्वागत करते हुए *'गढ़ रे मन गढ़'* की विशिष्टताओं पर प्रकाश डाला। समारोह में साहित्य जगत् के विद्वत-गण की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती रत्ना शर्मा ने किया।

डॉ. संगीता सक्सेना की रिपोर्ट

श्री प्रह्लाद रामशरण की 8 पुस्तकों का लोकार्पण

8 अप्रैल, 2017 को आर्य समाज भवन, बो-बासें, मॉरीशस में भारतीय उच्चायोग, विश्व हिंदी सचिवालय, आर्य सभा मॉरीशस तथा इंद्रधनुष सांस्कृतिक परिषद् के संयुक्त सहयोग से वरिष्ठ साहित्यकार श्री प्रह्लाद रामशरण की 8 पुस्तकों का लोकार्पण किया गया, यथा 1. *'मॉरीशस का सुबोध इतिहास'*, 2. *'गांधी जी बोलो थे-छद्म अवधारणाओं का आलेख'*, 3. *'लहरों की बेटी-एक अनुशीलन'*, 4. *'मॉरीशस की रोचक लोक कथाएँ-भाग 1'*, 5. *'मॉरीशस की रोचक लोक कथाएँ-भाग 2'*, 6. *'मॉरीशस के हिंदी सेवी प्रह्लाद रामशरण'*, 7. *'ए रिवर अव स्टोरिज़, खण्ड 3-वायु'*, 8. *'ए रिवर अव स्टोरिज़, खण्ड 4-अग्नि'*। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित मॉरीशस गणराज्य के उपराष्ट्रपति, महामहिम श्री परमशिवम पिल्ले वायापुरी, जी.ओ.एस.के. ने श्री रामशरण के खोजकार्यों एवं कलम चलाने के प्रति उनके अद्वितीय साहसपूर्ण कार्यों की सराहना करते हुए उन्हें बधाई दी। श्री अब्दुल राऊफ़ बंधन, विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव, प्रो. विनोद कुमार मिश्र, भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव (शिक्षा व भाषा), डॉ. नूतन पाण्डेय तथा बैंक ऑव बड़ौदा के उपाध्यक्ष, श्री रवि चतुर्वेदी, आर्य सभा के प्रधान डॉ. उदय नारायण गंगू, श्री राज हीरामन, श्री ईवान मारसियल व कुमारी अंजनी मर्दन विशेष अतिथि के रूप में मंचासीन थे। श्री रामशरण ने उपस्थित सभी महानुभावों तथा विभिन्न संस्थाओं के कर्मठ सदस्यों का आभार व्यक्त किया तथा प्रो. मिश्र के कर-कमलों द्वारा महामहिम श्री वायापुरी को तमिल भाषा में लिखित *'कम्ब रामायण'* की अनूदित प्रति भेंट की। मंच-संचालन श्रीमती संगीता रामशरण नन्कू तथा पं. मुखलाल लोकमान ने किया।

पं. मुखलाल लोकमान की रिपोर्ट

श्री शशि नारायण स्वाधीन के कविता-संग्रह 'पोस्टर वार' का लोकार्पण

30 अप्रैल, 2017 को हिमायत नगर स्थित उर्दू हॉल, हैदराबाद में श्री शशि नारायण स्वाधीन के कविता-संग्रह 'पोस्टर वार' का लोकार्पण प्रो. दिलीप सिंह के हाथों संपन्न हुआ। कोलकाता विश्वविद्यालय के डीन प्रो. राम अल्हाद चौधरी ने कहा कि श्री शशि नारायण स्वाधीन ने मौजूदा समय से जुड़कर हिंदी कविता के जनक्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई है। राज्य सरकार के सूचना आयोग के वरिष्ठ न्यायाधीश टी. गोपाल सिंह ने श्री स्वाधीन की रचना को सशक्त जन माध्यम घोषित करते हुए उनकी काव्य-शक्ति को आंदोलनकारी बताया। इस अवसर पर फ़रीद जियाई, डॉ. के. एल. व्यास, डॉ. राम कोटी, प्रसन्न भंडारी, नीतिश पाण्डेय, प्रो. दुर्गेश नंदनी, कमर जमाली, डॉ. अहिल्या मिश्र, बंशीलाल, मंजू ने भी अपने विचार व्यक्त किए। धन्यवाद-ज्ञापन श्री अर्जुन सिंह ने किया।

साभार : इ-पेपर स्वतंत्रवार्ता.कॉम

मधेपुरा में डॉ. अमोल राय की पुस्तक 'लोक जीवन में संस्कार और संस्कार गीत' का लोकार्पण

8 अप्रैल, 2017 को भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा में विमर्श कार्यक्रम के अंतर्गत डॉ. अमोल राय की पुस्तक *'लोक जीवन में संस्कार और संस्कार गीत'* का लोकार्पण संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बिहार के वरिष्ठ नेता, पूर्व मंत्री नंदकिशोर यादव रहे। कार्यक्रम में उन्होंने लोक जीवन तथा गीत कथाओं को संरक्षित और सुरक्षित करने के लिए बौद्धिक जनों से आगे आने की बात कही। इस अवसर पर बी.एन. मंडल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. विनोद कुमार, प्रथम कुलपति, पूर्व सांसद डॉ. रविंद्र कुमार यादव रवि तथा पूर्व प्रतिकुलपति डॉ. के. के. मंडल ने लोक जीवन में संस्कार और संस्कार गीत पर बात की। समारोह में बी.एन. मंडल विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलिजों के प्राचार्य शिक्षक, छात्र, शोधार्थी आदि उपस्थित थे। समारोह का संचालन डॉ. विनोद कुमार चौधरी ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन सहरसा के मैथिली विभागाध्यक्ष डॉ. राम नरेश सिंह ने किया।

साभार : मधेपुरा टाइम्स.कॉम

श्री अशोक शुक्ल 'अंजान' के छंद-संग्रह 'कवित्त कलश' का लोकार्पण

16 अप्रैल, 2017 को हिंदी संस्थान के निराला सभागार, उत्तर प्रदेश में चेतना साहित्य परिषद् के तत्वावधान में नवोदित कवि अशोक शुक्ल *'अंजान'* की प्रथम काव्य-कृति व छंद-संग्रह *'कवित्त कलश'* का लोकार्पण हुआ। समारोह की अध्यक्षता पूर्व महापौर डॉ. दाऊजी गुप्त ने किया। मुख्य अतिथि वरिष्ठ छंदकार अशोक कुमार पांडेय अशोक रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित प्रो. ओमप्रकाश गुप्त 'मधुर' ने पुस्तक को सभी प्रकार से श्रेष्ठ कृति की संज्ञा दी। मुख्य वक्ता प्रमोद द्विवेदी प्रमोद ने पुस्तक पर विस्तार से समीक्षात्मक वक्तव्य देते हुए कवि की त्रुटिविहीन छंदों की सराहना की तथा पुस्तक के भाव-पक्ष एवं कला-पक्ष दोनों दृष्टियों से इसे एक पुष्ट रचना की संज्ञा दी। श्री अशोक शुक्ल 'अंजान' ने अपनी काव्य-यात्रा की चर्चा की तथा अपनी पुस्तक के कुछ छंदों का पाठ भी किया। कार्यक्रम का संचालन हरिमोहन वाजपेयी माधव ने किया तथा संस्था के कोषाध्यक्ष रमाशंकर सिंह ने आभार व्यक्त किया।

साभार : खबर इंडिया 24

'आधुनिक हिंदी लघुकथा : आधार एवं विश्लेषण' पुस्तक तथा 'एक और पहल' काव्य-संग्रह का लोकार्पण एवं लघुकथा गोष्ठी

14 मई, 2017 को युवक साहित्य सदन, हरियाणा में हरियाणा प्रादेशिक लघुकथा मंच द्वारा वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. रूप देवगुण की समीक्षा से संबंधित पुस्तक *'आधुनिक हिंदी लघुकथा : आधार एवं विश्लेषण'* एवं श्री जनकराज शर्मा के काव्य-संग्रह 'एक और पहल' का लोकार्पण तथा लघुकथा गोष्ठी का आयोजन किया गया। पुस्तकों की समीक्षा डॉ. शील कौशिक और ज्ञानप्रकाश पीयूष ने की। प्रो. रूप देवगुण की पुस्तक में 61 लघु कथाकारों के पत्र-साक्षात्कार प्रकाशित किए गए हैं। प्रो. रूप देवगुण ने 50 पृष्ठों का विश्लेषण प्रस्तुत किया है, जिसमें उन्होंने आधुनिक हिंदी लघुकथा के विभिन्न मुद्दों को लेकर उससे संबंधित मूल्यांकन किया है। कार्यक्रम के दौरान दिवंगत साहित्यकार डॉ. सुरेंद्र वर्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर डॉ. जी. डी. चौधरी को 'डॉ. सुरेंद्र वर्मा स्मृति सम्मान' से अलंकृत किया गया। मंच-संचालन प्रो. रूप देवगुण, डॉ. शील कौशिक और हरीश सेठी ने किया।

साभार : भास्कर.कॉम

प्रधान मंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी द्वारा श्रीमती सुमित्रा महाजन की पुस्तक 'मातोश्री' का विमोचन

11 अप्रैल, 2017 को दिल्ली की संसदीय ज्ञानपीठ में प्रधान मंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी द्वारा लोक-सभा अध्यक्ष व इंदौर से 8 बार की सांसद रही भारत की पहली महिला श्रीमती सुमित्रा महाजन की पुस्तक *'मातोश्री'* का विमोचन हुआ, जिसमें कई सांसद एवं राज्य सभा सदस्य भी शामिल थे। समारोह में अन्य गण्यमान्य अतिथियों के साथ इंदौर की महापौर श्रीमती मालिनी गौर, एम.आई.सी. सदस्य श्री सुधीर देडगे, पार्षद विनीता धर्म, दीपिका कमलेश नाचन, ज्योति तोमर सहित राजेश अग्रवाल, देवेन्द्र इनानी, राम मूंदड़ा, अशोक डागा व गुलाब ठाकुर विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में देवी अहिल्याबाई होलकर के जीवन पर आधारित एक नाटक का मंचन भी हुआ।

साभार : वेबदुनिया.कॉम

श्रीमती सीमा भाटी के कहानी-संग्रह 'महीन धागे से बुना रिश्ता' का लोकार्पण

16 अप्रैल, 2017 को धरणीधर रंगमंच, बीकानेर में नट साहित्य एवं संस्कृति संस्थान द्वारा श्रीमती सीमा भाटी के कहानी-संग्रह *'महीन धागे से बुना रिश्ता'* का लोकार्पण किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्रीडूंगर महाविद्यालय में उर्दू विभागाध्यक्ष डॉ. मोहम्मद हुसैन तथा विशिष्ट अतिथि राजस्थान राज्य अभिलेखागार के निदेशक डॉ. महेंद्र खडग़ावत थे। इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष वरिष्ठ रंगकर्मी-पत्रकार मधु आचार्य आशावादी तथा कवयित्री ऋतु शर्मा ने श्रीमती सीमा भाटी के कहानी-संग्रह पर अपने विचार व्यक्त किए। श्रीमती सीमा भाटी ने कहा कि साहित्य जगत् में यह एक पहल तथा उनका प्रयत्न रहा कि यह पहली पुस्तक गद्य-विधा में आए। इस अवसर पर वरिष्ठ कथाकार भंवरलाल भ्रमर, डॉ. मदन सैनी, पवन शर्मा, आशीष पुरोहित, घनश्यामनाथ कच्छावा एवं गायत्री शर्मा को सम्मानित किया गया। समारोह का संचालन हरीश बी. शर्मा ने किया तथा आभार धूमल भाटी ने व्यक्त किया।

साभार : खासखबर.कॉम

'तिनका : एक सफ़रनामा' का लोकार्पण, काव्य-गोष्ठी एवं सम्मान-समारोह

20 मई, 2017 को हिंदी भवन, आई.टी.ओ. के सभागार, नई दिल्ली में अनुराधा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित श्री संजीव कुमार दीक्षित 'बेकल' की पुस्तक *'तिनका : एक सफ़रनामा'* का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. ओ. पी. शर्मा ने की तथा डॉ. सरोजिनी प्रीतम, मुख्य अतिथि और डॉ. राम प्रकाश शर्मा, श्रीमती कविता मल्होत्रा व प्रकाशक श्री मनमोहन शर्मा 'शरण', विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। लेखक श्री दीक्षित ने अपना वक्तव्य देते हुए कई कविताओं व ग़ज़लों को श्रोताओं के सम्मुख प्रस्तुत किया। इसके बाद उपस्थित कवियों द्वारा काव्य-पाठ हुआ, जिसमें श्रीमती शबनम शंकर, श्री जसवंत सिंह 'गुरजधर', श्री लाल बिहारी लाल, श्रीमती वंदना गोयल, श्री आशुतोष द्विवेदी, श्री हीरेंद्र चौधरी आदि प्रमुख थे। श्रीमती प्रियंका लूथरा ने संचालन किया तथा अंत में प्रकाशक ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद किया।

साभार : 'तिनका : एक सफ़रनामा' का फ़ेसबुक पृष्ठ

श्री चित्रसेन सिंह कृत 'धरती पर स्वर्गमय जीवन' पुस्तक का लोकार्पण

11 जून, 2017 को वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर के संगोष्ठी भवन में श्री चित्रसेन सिंह द्वारा रचित *'धरती पर स्वर्गमय जीवन'* पुस्तक का विमोचन राज्यमंत्री नगर विकास माननीय गीरिश चन्द्र यादव के हाथों संपन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री बी. डी. सिंह, वरिष्ठ अधिवक्ता ने किया। वी. वी. एस. पूर्वांचल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजाराम यादव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर माननीय मंत्री जी ने कहा कि एक शिक्षक कभी भी अवकाश ग्रहण नहीं करता, वह हमेशा समाज को कुछ न कुछ देता रहता है। एक शिक्षक अपने संयमित जीवन से समाज और बच्चों के लिए स्वयं एक आदर्श प्रस्तुत करता है। समारोह का संचालन प्रो. आर. एन. सिंह ने किया।

साभार : राजूदादा वर्डप्रेस.कॉम

अष्टम् साहित्य गरिमा पुरस्कार समारोह, 'पुष्पक-34' पुस्तक-लोकार्पण तथा कादम्बिनी क्लब की गोष्ठी

17 अप्रैल, 2017 को तेलंगाना सारस्वत परिषद् के बोगुलकंटा सभागार, हैदराबाद में अष्टम् साहित्य गरिमा पुरस्कार समारोह, *'पुष्पक-34'* पुस्तक-लोकार्पण तथा कादम्बिनी क्लब की गोष्ठी का आयोजन किया गया।

प्रथम सत्र में काव्य-गोष्ठी संपन्न हुई, जिसकी अध्यक्षता प्रो. ऋषभदेव शर्मा ने की। डॉ. राजम नटजन पिल्लै (मुंबई), शांति अग्रवाल, साधना ठाकुर (सम्मानित अतिथि), रामकिशोर उपाध्याय, डॉ. रामविलास साहू तथा प्रिया चौधरी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री भंवरलाल उपाध्याय के संचालन में दीपाधगर, शशिराय, सुषमा पांडे, डॉ. गीता जांगिड़, पूनम जोधपुरी, डॉ. राजम (मुंबई), डॉ. रामविलास साहू (मैसूर), रामकिशोर उपाध्याय (दिल्ली), दर्शन सिंह, पुष्पावर्मा, मंगला अभ्यंकर, सूनीता लुल्ला, अवधेश कुमार सिन्हा, कुंजबिहारी गुप्त, प्रवीण प्रणव, डॉ. अर्चना झा, सुरेश जैन, लक्ष्मण शिवहरे, उमेश चंद्र श्रीवास्तव ने काव्य-पाठ किया।

द्वितीय सत्र में अष्टम् साहित्य गरिमा पुरस्कार 2016 समारोह तथा *'पुष्पक-34'* पुस्तक का लोकार्पण संपन्न हुआ। इस अवसर पर आंध्र प्रदेश के पुलिस महानिदेशक आर. पी. ठाकुर मुख्य अतिथि एवं उद्घाटनकर्ता के रूप में तथा किशोर उपाध्याय, डॉ. रामनिवास साहू, प्रिया चौधरी तथा मानवेन्द्र मिश्र, प्रबंधन्यासी, साहित्य गरिमा पुरस्कार समिति विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस सत्र की अध्यक्षता साहित्य गरिमा पुरस्कार समिति की संस्थापिका अध्यक्ष, डॉ. अहिल्या मिश्र ने की। तत्पश्चात् डॉ. राजम नटजन पिल्लै को 'अष्टम् साहित्य गरिमा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री आ. पी. ठाकुर द्वारा *'पुष्पक-34'* पुस्तक का लोकार्पण संपन्न हुआ। साथ ही, वरिष्ठ कवयित्री श्रीमती विनीता शर्मा का सम्मान कादम्बिनी क्लब तथा ऑथर्स गिल्ड ऑव इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। समारोह में कई हिंदी प्रेमियों की उपस्थिति रही।

साभार : स्वतंत्रवार्ता.कॉम

श्री शरद पवार की आत्मकथा 'अपनी शर्तों पर' का लोकार्पण

11 अप्रैल, 2017 को जनपथ स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय सभागार में एन.सी.पी. प्रमुख तथा महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री, केंद्रीय रक्षा-मंत्री एवं कृषि-मंत्री श्री शरद पवार की आत्मकथा *'अपनी शर्तों पर'* का लोकार्पण किया गया। *'अपनी शर्तों पर'* श्री शरद पवार की अंग्रेज़ी में प्रकाशित आत्मकथा *'ऑन माय टर्म्स'* का हिंदी अनुवाद है। कार्यक्रम के सूत्रधार सांसद देवी प्रसाद त्रिपाठी तथा राज्य सभा सांसद के. सी. त्यागी ने पुस्तक पर अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री शरद पवार के जीवन पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर सीताराम येचुरी, गुलाम नबी आज़ाद, प्रफुल पटेल, नीरज शेखर, सतिश चंद्र, डी. राजा, सुप्रिया सुले एवं कई अन्य राजनेता उपस्थित थे।

साभार : ग्रेनो लाइव.कॉम

श्री मनोज कामदेव की पुस्तक 'देवभूमि उत्तराखण्ड' का लोकार्पण

14 अप्रैल, 2017 को आगमन साहित्यिक संस्था द्वारा हिंदी भवन, नई दिल्ली में कवि मनोज कामदेव की पुस्तक *'देवभूमि उत्तराखण्ड'* का लोकार्पण हुआ, जिसके मुख्य अतिथि डॉ. अशोक मधुप, विशिष्ट अतिथि डॉ. हरीश अरोड़ा एवं आर. सी. जोशी, आगमन संस्था के प्रमुख श्री पवन जैन, पंजाब केसरी के न्यूज़ एडिटर श्री सूर्यप्रकाश सेमवाल और टू मीडिया के संपादक श्री प्रकाश प्रजापति रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप-प्रज्ज्वलन एवं कवयित्री मनीषा जोशी द्वारा सरस्वती-वंदना से हुआ। श्री मनोज कामदेव ने अपने वक्तव्य में कहा कि ***''इस पुस्तक के माध्यम से उत्तराखण्ड के इतिहास, संस्कृति, प्राकृतिक धरोहर, सामाजिक रीति-रिवाज़, आर्थिक व भौगोलिक दर्शन को जन साधारण तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है।''*** इस अवसर पर काव्य-गोष्ठी भी हुई, जिसमें उपस्थित अनेक कवियों ने काव्य-पाठ किया। अंत में, श्री मनोज कामदेव ने आभार व्यक्त किया तथा मंच-संचालन डॉ. स्वीट अंजेल ने किया।

साभार : मयूर संवाद

श्री राकेश मिश्र को 'कृष्ण प्रताप कथा-सम्मान'

14 अप्रैल, 2017 को रामानंद सरस्वती पुस्तकालय जोकहरा, आज़मगढ़ में आयोजित सम्मान-समारोह में साहित्यकार श्री राकेश मिश्र को *'कृष्ण प्रताप कथा-सम्मान'* से सम्मनित किया गया, जिसके मुख्य अतिथि प्रख्यात फ़िल्म समीक्षक प्रह्लाद अग्रवाल थे। उन्होंने मिश्र की कहानियों के नाटकीय तत्वों की गंभीर विवेचना की। समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रगतिशील लेखक संघ के राष्ट्रीय महासचिव राजेंद्र राजन ने कहा ***''राकेश मिश्र की कहानियों में प्रतिबद्धता और कला का अद्भुत सम्मिश्रण है। वे समकालीन कथा पीढ़ी के उन खास कहानीकारों में हैं, जिन्होंने अपनी एक स्पष्ट राजनैतिक पहचान विकसित की है।''*** कार्यक्रम के संयोजन एवं निर्णायक मंडल के प्रमुख सदस्य व प्रख्यात उपन्यासकार विभूति नारायण राय ने मिश्र की कहानियों की खासियत बताते हुए कहा कि नब्बे के बाद के हमारे समाज में आए तीव्र बदलाव को समझने के लिए राकेश मिश्र एक अपरिहार्य कहानीकार हैं।

कार्यक्रम में युवा आलोचक शंभु शरण मिश्र, कालू लाल कुलमी, प्रियदर्शन मालवीय एवं सानू पाण्डेय सहित विभिन्न साहित्यकार, अष्टभुजा शुक्ल, जयप्रकाश धूमकेतु, अनिल राय, पी. सी. राय, नरेंद्र पुंडरीक, संजय श्रीवास्तव एवं संजय सिंह उपस्थित थे।

बी. एस. मिरगे की रिपोर्ट

सेतु साहित्य सम्मान-समारोह

17 मई, 2017 को रुझान प्रकाशन के सहयोग से उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, हज़रतगंज, लखनऊ में प्रथम सेतु साहित्य सम्मान-समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ कथाकार शिवमूर्ति व मुख्य अतिथि श्री यतीन्द्र मिश्र के कर-कमलों द्वारा सुप्रसिद्ध लेखिका सुश्री मैत्रेयी पुष्पा को हिंदी साहित्य में उनके अविस्मरणीय योगदान के लिए *'सेतु हिंदी साहित्य सम्मान'* तथा श्री शैलेश भारतवासी को हिंदी साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए *'सेतु हिंदी प्रसारक सम्मान'* प्रदान किया गया। इस अवसर पर रुझान प्रकाशन द्वारा प्रकाशित, श्वेता दीक्षित की पुस्तक 'गुरु-शिष्य परंपरा' एवं प्रतुल सिन्हा का उपन्यास *'आलाकमान'* का विमोचन भी किया गया। समारोह के अंतर्गत लेखक श्री दीपक मशाल के लघुकथा-संग्रह *'खिड़कियों के परे'* पर साहित्य-संवाद तथा लघुकथा-विमर्श का आयोजन भी किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि श्री महेन्द्र भीष्म, विशिष्ट अतिथि श्री विवेक मिश्र तथा अध्यक्ष सुश्री मैत्रेयी पुष्पा ने अपने विचार व्यक्त किए।

साभार : जनसंदेश टाइम्स

डॉ. विजयमोहन सिंह स्मृति युवा कथा पुरस्कार अलंकरण समारोह एवं परिचर्चा

23 मार्च, 2017 को *डॉ. विजयमोहन सिंह स्मृति युवा कथा पुरस्कार समारोह* एवं *'कथा-आलोचना का समकाल'* विषयक एक परिचर्चा गोष्ठी का आयोजन स्टेट म्यूज़ियम सभागार, भोपाल में हुआ, जिसमें शोध-छात्रा व युवा कथाकार सुश्री हुस्न तबस्सुम निहां को उनके सृजनात्मक कथा-लेखन तथा हिंदी साहित्य व भाषा के प्रति उनकी निष्ठा एवं प्रतिबद्धता के लिए पहला *'डॉ. विजयमोहन सिंह पुरस्कार'* से नवाज़ा गया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्री अशोक वाजपेयी ने डॉ. विजयमोहन सिंह की पहली पुस्तक सन् साठ के बाद की कहानियों का ज़िक्र करते हुए कहा ***''विजयमोहन सिंह एक बेबाक आलोचक थे, जो प्रेमचंद की आलोचना कर सकते थे और जब साहित्य समाज अज्ञेय की आलोचना कर रहा था, उस समय वे अज्ञेय के पक्ष में खड़े थे।''*** कार्यक्रम के अंतर्गत वरिष्ठ साहित्यकार श्री विजय बहादुर सिंह ने डॉ. विजयमोहन सिंह स्मृति ट्रस्ट के वेबसाइट का लोकार्पण किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि एवं कथाकार श्री विभूति नारायण राय तथा अध्यक्ष, कवि प्रो. केदारनाथ सिंह सहित भोपाल शहर के अनेक प्रतिष्ठित साहित्यकार व संस्कृतिकर्मी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री विनय उपाध्याय ने किया तथा आभार-ज्ञापन डॉ. विजयमोहन सिंह के पुत्र युवा कथाकार श्री वर्तुल सिंह ने किया।

साभार : दैनिकभास्कर.कॉम

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की स्मृति में गोष्ठी और सम्मान-समारोह

20 मई, 2017 को राइटर्स एंड जर्नलिस्ट एसोसिएशन, दिल्ली तथा आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी राष्ट्रीय स्मारक समिति, रायबरेली के संयुक्त तत्वावधान में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की 153वीं जयंती के उपलक्ष्य में दिल्ली के गांधी शांति प्रतिष्ठान में एक स्मृति-गोष्ठी और सम्मान-समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का प्रारंभ आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी राष्ट्रीय स्मारक समिति के संयोजक गौरव अवस्थी द्वारा संस्था व आयोजन की विस्तृत रूपरेखा-प्रस्तुति से हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित केंद्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष डॉ. कमल किशोर गोयनका ने कहा ***''प्रेमचंद के निर्माण में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का बहुत बड़ा योगदान था। प्रेमचंद ने उनपर दो संस्मरण भी लिखे। प्रेमचंद ने पंचों में ईश्वर शीर्षक के साथ जो कहानी आचार्य द्विवेदी को प्रकाशित करने के लिए भेजी थी, वह 'पंच परमेश्वर' नाम से छपी। द्विवेदी जी ने नाम बदलकर कहानी में जो चमक पैदा की, वह अद्भुत थी।''***

समारोह के अंतर्गत सप्रे संग्रहालय, भोपाल के संस्थापक पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर को *'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी स्मृति राष्ट्रीय पुरस्कार'*, हापुड़ के सामाजिक कार्यकर्ता श्री कर्मवीर को 'मामा बालेश्वर स्मृति पुरस्कार', दिल्ली के वरिष्ठ पत्रकार पंकज चतुर्वेदी को 'अनुपम मिश्र स्मृति पर्यावरण पुरस्कार', दैनिक जागरण के विशेष संवाददाता संजय सिंह करीब को 'अरविंद घोष स्मृति पुरस्कार', सुश्री प्रतिभा ज्योति को 'कंचन स्मृति पुरस्कार', श्री विवेक शुक्ल को 'देवेन्द्र उपाध्याय स्मृति सम्मान' और अवधी के प्रख्यात कवि आचार्य सूर्यप्रकाश शर्मा 'निशिहर' को 'समई काका सम्मान' से सम्मानित किया गया। भावी योजनाओं पर प्रकाश डालने के साथ समारोह का संचालन राइटर्स एंड जर्नलिस्ट एसोसिएशन दिल्ली के अध्यक्ष श्री अरविंद कुमार सिंह ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन राइटर्स एंड जर्नलिस्ट एसोसिएशन के महासचिव श्री शिवेंद्र प्रकाश द्विवेदी ने किया।

डॉ. अरविंद कुमार सिंह की रिपोर्ट

विश्व वागेश्वरी सम्मान 2017

19 अप्रैल, 2017 को पुणे में विश्व साहित्य परिषद् द्वारा पूर्व राष्ट्रपति, श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल और प्रसिद्ध आध्यात्मिक गुरु श्री श्री रविशंकर के हाथों विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को *'विश्व वागेश्वरी सम्मान'* से विभूषित किया गया। समारोह की अध्यक्षता पूर्व राज्यपाल, श्री डी. वाई. पाटिल ने की। इस अवसर पर महाराष्ट्र के संसदीय कार्य-मंत्री, माननीय श्री गिरीश बापट, पुणे की मेयर, माननीया मुक्ता तिलक तथा दीनदयाल समिति संस्थान के निदेशक, श्री विनोद शुक्ल विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री तेजेंद्र शर्मा (साहित्य), जस्टिस ज्ञान सुधा (विधि एवं न्याय), कांतिलाल हसतीमल संचेती (चिकित्सा), डॉ. रमा पांडेय (कला), डॉ. हरीश नवल, डॉ. अरुणा ढेरे, हुकम सिंह मीणा (प्रशासन), संजय भारद्वाज (भाषा-रंगकर्म), सचिन गुप्ता (शिक्षा), जयश्री पेरीवाल (शिक्षा), ओम प्रकाश गट्टाणी (सांस्कृतिक विरासत), पंडित मुकेश भारद्वाज (ज्योतिष एवं मानव कल्याण), सुशील वर्मा (सामाजिक कार्य) और सुरेंद्र सिंह (सामाजिक कार्य) सम्मानित व्यक्तियों में शामिल थे।

श्री तेजेंद्र शर्मा की रिपोर्ट

श्रद्धांजलि

श्री दिमलाला मोहित

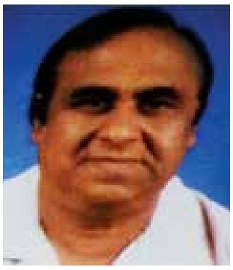

16 जून, 2017 को मॉरीशस के प्रसिद्ध भोजपुरी साहित्यकार श्री दिमलाला मोहित का 72 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपने एस.सी., जी.सी.ई., उत्तमा (हिंदी), कोविद (संस्कृत), आडल्ट लिटरेरी कोर्स, हिंदी लेखक कोर्स और सर्टिफ़िकेट इन एजुकेशन की पढ़ाई की। आप 1964 में सरकारी हिंदी अध्यापक और 1986 में डेप्यूटी हेड टीचर के रूप में काम कर चुके हैं और एम.बी.सी. कार्यक्रम 'भोजपुरी बहार' के निर्णायक रह चुके हैं। आपको भोजपुरी पुस्तक 'विदेशी छात्र की सर्वश्रेष्ठ रचना' के लिए ऑल इंडिया फ़ोल्क-कल्चर रिसर्च इंस्टिट्यूट, यू.पी. द्वारा मान-पत्र, 'मोका-फ़्लाक ज़िला परिषद' द्वारा सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों के लिए मान-पत्र, पोस्त दे फ़्लाक, पेरन्ट टीचर एसोसिएशन द्वारा बच्चों के हित में कार्य हेतु मान-पत्र, मॉरीशस में हुए 'अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी सम्मेलन' में 'अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी आवर्ड' और 2006 में हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा 'हिंदी मान-पत्र' से सम्मानित किया गया। ह्यूमन सर्विस ट्रस्ट द्वारा निबंध प्रतियोगिता के लिए आपको पुरस्कृत भी किया गया। आपकी रचनाओं में मॉरीशस की भोजपुरी में प्रचलित लोकोक्तियाँ, मुहावरे, गीत, पहेलियाँ और कहानियाँ हैं। आपने 2003 में भोजपुरी के *'हीरा-मोती'* (भाग 3, भाग 7 तथा वोल्यूम 2) की रचना की। 2010 में भारत की भोजपुरी पत्रिकाओं में आपके लेख शामिल हैं। आपने अनेकानेक सम्मेलनों एवं कार्यशालाओं में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा भोजपुरी और हिंदी भाषाओं में स्थानीय टेलीविजन पर अनेक कार्यक्रमों में भी भाग लिया।

फ़ेसबुक तथा विश्व हिंदी डेटाबेस से साभार

डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र

10 अप्रैल, 2017 को हिंदी-संस्कृत की प्रख्यात साहित्यकार डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र का पटना में निधन हो गया। हिंदी, संस्कृत व अंग्रेज़ी में महाकाव्य, खण्डकाव्य, नाटक व समीक्षा सहित हर विधा पर आपकी लेखनी चली। अपने जीवन काल में आपने 42 पुस्तकें लिखीं। हिंदी जगत् में महाकाव्य रचनेवाली आप प्रथम महिला रचनाकार हैं तथा हिंदी साहित्य की लेखिकाओं में सबसे कम उम्र में डी.लिट. की उपाधि प्राप्त करने का रिकॉर्ड भी आपके नाम है। थाई रामायण का विश्व में पहला पद्यानुवाद करने पर थाईलैंड की राजकुमारी ने बैंकॉक में हुए साहित्य समारोह में आपको सम्मानित किया था। आपके द्वारा अनूदित प्राकृत रचना 'गौडवहो' का हिंदी संस्करण लखनऊ विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में समाहित है। पटना की 135 वर्ष पुरानी संस्था, संस्कृत संजीवन समाज की महासचिव सहित संस्कृत शोध त्रैमासिकी *'संस्कृत संजीवनम्'* की संपादिका भी थीं। आप हिंदी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद की स्थायी सदस्य रहीं तथा कानपुर से निकलनेवाले एकमात्र संस्कृत समाचार-पत्र *'नवप्रभावतम्'* के संपादन मंडल की सदस्या भी थीं। इसके अतिरिक्त आपने कई ग्रंथों का संपादन तथा अनुवाद किया तथा अनेक साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित व पुरस्कृत भी हुईं।

साभार : इंडियनवॉइस24.कॉम

श्री सी. नारायण रेड्डी

12 जून, 2017 को प्रसिद्ध भारतीय, तेलुगू तथा उर्दू साहित्यकार श्री सी. नारायण रेड्डी का 85 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 29 जुलाई, 1931 को हैदराबाद, तेलंगाना में हुआ था। माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आप 1949 में उस्मानिया विश्वविद्यालय में पढ़ाई करने गए। 1954 में आपने एम.ए. की डिग्री प्राप्त की तथा आप कॉलिज के व्याख्याता के पद पर नियुक्त हुए। 1962 में पी.एच.डी. प्राप्त करने के बाद 1976 में आपको प्रोफ़ेसर के पद पर नियुक्त किया गया। अगस्त 1997 में आपको भारतीय सांसद के राज्य सभा में नामांकित किया गया। 2015 में आपको 'साहित्य अकादमी महत्तर सदस्यता' प्राप्त हुई। 1988 में आपको श्री राज लक्ष्मी फ़ाउंडेशन द्वारा 'राज लक्ष्मी पुरस्कार', 1988 में 'ज्ञानपीठ पुरस्कार', 1982 में 'सोवियत लेंड नेहरू पुरस्कार', 1978 में आंध्र विश्वविद्यालय द्वारा 'कला प्रपूर्णा आवर्ड', 1973 में आपको अपने काव्य-संग्रह 'मंतलू मानवुडु' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, पोट्टी श्रीरमुलू तेलुगू विश्वविद्यालय द्वारा 'विशिष्ट पुरस्कार', भारत सरकार द्वारा 1977 में 'पद्मश्री' तथा 1992 में 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया। आपकी प्रमुख रचनाओं में *'विश्वंभरा'*, *'नागार्जुन सागरम'*, *'विश्वगीति'*, *'भूमिका'* आदि शामिल हैं। इसके अतिरिक्त आपने फ़िल्मी जगत् में भी प्रसिद्धि पाई। आपने कई नाटक तथा 3000 से अधिक गाने भी लिखे।

साभार : आजतक.इन टूडे तथा विकीपीडिया

फ़िल्मी दुनिया के साथ-साथ हिंदी जगत् ने भी इस वर्ष दो अनमोल रत्न खो दिए। यह असंदिग्ध है कि हिंदी सिनेमा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार व गतिशीलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है। फ़ीचर फ़िल्म हो या धारावाहिक, पूरे विश्व की रुचि इनमें केंद्रित है और इस कारण हिंदी सिनेमा भाषा के प्रचार का सशक्त माध्यम है। ऐसे में फ़िल्मी दुनिया के दो चमकते सितारों का निधन समस्त हिंदी जगत् के लिए क्षतिपूर्ण है।

श्री विनोद खन्ना

27 अप्रैल, 2017 को कैंसर से पीड़ित दिग्गज फ़िल्म अभिनेता, फ़िल्म निर्माता तथा राजनीतिज्ञ श्री विनोद खन्ना का 70 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 6 अक्टूबर, 1946 को पेशावर, ब्रितानी भारत (अभी पाकिस्तान) में हुआ था। आपकी प्रारंभिक शिक्षा सेंट मेरी स्कूल तथा 1957 में दिल्ली पब्लिक स्कूल में हुई। 1960 के बाद आपकी स्कूली शिक्षा नासिक के बोर्डिंग स्कूल में हुई। आपने सिद्धेहम कॉलिज से वाणिज्य में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। श्री विनोद खन्ना एक सक्रिय राजनीतिज्ञ तथा 1998-2008 और 2014-2017 में पंजाब के गुरदासपुर चुनाव क्षेत्र के संसद सदस्य रहे। जुलाई 2002 में भारत के पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के मंत्रिमंडल में आप संस्कृति तथा पर्यटन मंत्री बनाए गए तथा 6 माह पश्चात् आपको महत्वपूर्ण विदेश मामलों के मंत्रालय में राज्य मंत्री बनाया गया। आपने अपने 4 दशक लंबे फ़िल्म कैरियर में लगभग 150 फ़िल्मों में अभिनय किया। 1982-1986 तक आप आध्यात्मिक गुरु रजनीश ओशो के अनुगामी बने तथा 5 वर्षों के अंतराल में आप पर्दे पर पुनः आए। आपने अपनी फ़िल्मी सफ़र का आरंभ 1968 में सुनील दत्त की फ़िल्म 'मन का मीत' में खलनायक के किरदार से किया। 'पूरब और पश्चिम', 'मेरा गाँव मेरा देश', 'मुकद्दर का सिकंदर', 'परवरिश', 'गद्दर', 'सत्यमेव जयते', 'दबंग', 'कुरबानी', *'इम्तिहान'*, 'अचानक', 'अमर अकबर एंथनी' आदि फ़िल्मों में आपकी भूमिका दमदार रही है। 2007 में ज़ी सिने आवर्ड द्वारा 'लाइफ़टाइम अचीवमेंट', 2005 में स्टारडस्ट आवर्ड द्वारा 'रोल मॉडल फ़ॉर द यर', 1999 में 3 दशक से हिंदी सिनेमा में योगदान के लिए फ़िल्मफ़ेयर का 'लाइफ़टाइम अचीवमेंट आवर्ड', 1981 में 'कुरबानी' फ़िल्म हेतु फ़िल्मफ़ेयर में मनोनीत, 1979 में 'मुकद्दर का सिकंदर' के लिए फ़िल्मफ़ेयर का 'बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर', 1977 में फ़िल्मफ़ेयर द्वारा 'हेरा फ़ेरी' फ़िल्म के लिए 'बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर' हेतु मनोनीत तथा 1975 में 'हाथ की सफ़ाई' फ़िल्म हेतु फ़िल्मफ़ेयर का 'बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर आवर्ड' से सम्मानित किया गया।

श्रीमती रीमा लागू

18 मई, 2017 को प्रख्यात अभिनेत्री श्रीमती रीमा लागू का 59 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 21 जून, 1958 को मुंबई में हुआ था। आप हुज़ूरपगा उच्च माध्यमिक विद्यालय की विद्यार्थिनी रहीं तथा पढ़ाई के बाद आपने पेशेवर तौर पर अभिनय शुरू किया। आप अंत समय तक अभिनय के क्षेत्र में रहीं और स्टार प्लस के धारावाहिक 'नामकरण' में काम कर रही थीं। इसके अतिरिक्त आप मराठी रंगमंच और फ़िल्मों में भी काम कर रही थीं। 1979 में फ़िल्म 'सिंहासन' से आपने मराठी सिनेमा में पदार्पण किया। इसके बाद सन् 1980 में आपने 'कलयुग' चलचित्र में सहायक अभिनेत्री के रूप में हिंदी सिनेमा में कदम रखा। आपने 100 से अधिक फ़िल्मों में काम किया। आप 'हम आपके है कौन', 'हम साथ साथ है', और 'कल हो न हो' जैसे चलचित्रों में उत्कृष्ट अभिनय के लिए जानी जाती हैं। आप फ़िल्मों में माँ के रूप में निभाए गए किरदारों के लिए प्रसिद्ध हैं। फ़िल्म 'मैंने प्यार किया' में सलमान ख़ान की, 'वास्तव' में संजय दत्त की, 'कल हो न हो' में शाह रुख खान की और 'कुछ कुछ होता है' में काजोल की माँ का किरदार निभा चुकी हैं। आपने 'तू तू मैं मैं' और 'श्रीमान श्रीमती' जैसे लोकप्रिय टी.वी. धारावाहिकों में भी अभिनय किया। 2002 में 'रेशमगढ़' फ़िल्म के लिए आपको सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री हेतु 'महाराष्ट्र राज्य फ़िल्म पुरस्कार' तथा 2000 में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री हेतु 'भारतीय टेली पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। आपको 1999 में 'वास्तव : द रियालिटि', 1994 में 'हम आपके है कौन', 1990 में 'आशिक़ी' और 1989 में 'मैंने प्यार किया' चलचित्रों के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री हेतु 'फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार' के लिए नामांकित किया गया।

कुछ फ़िल्मी सितारे ऐसे भी हैं जो जाने के बाद भी पूरी दुनिया पर अपनी छाप छोड़ जाते हैं, और अपने फ़िल्मों, अभिनय-कला और हिंदी में प्रसिद्ध संवादों के ज़रिए हमेशा ज़िंदा रहते हैं। इनके प्रसिद्ध बोल लोग अभी भी याद करते हैं और कुछ लोगों के तो दैनंदिन जीवन का अंग भी बन जाते हैं।

विनोद खन्ना जी के मुख से निकले कुछ प्रसिद्ध बोल इस प्रकार हैं :
मुकद्दर का सिकंदर - "इज़्ज़त वो दौलत है, जो एक बार चली गई, तो फिर कभी हासिल नहीं की जा सकती।"
चांदनी - "दर्द की दवा न हो, तो दर्द को ही दवा समझ लेना चाहिए।"
प्लेयर्स - "रिटायर सिर्फ़ पुलिस वाले होते हैं, चोर नहीं।"
मुकद्दर का सिकंदर - "तलवार की लड़ाई तलवार से, प्यार की लड़ाई प्यार से और बेकार की लड़ाई सरकार से।"

श्रीमती रीमा लागू जी के मुख से निकले हिंदी के कुछ प्रसिद्ध बोल इस प्रकार हैं :
आशिकी - "कोई भी रिश्ता कितना भी महान, कितना भी बड़ा क्यों न हो, उसके खत्म हो जाने से ज़िंदगी खत्म नहीं होती।"
पत्थर के फूल - "ये दुनिया रिश्तों के नाम माँगती है।"
नाजायज़ - "माँ का दिल सब कुछ जानता है बेटे का सुख, बेटे का दुख - सब कुछ पहले से ही मालूम होता है ..."

साभार : दीपावली.को.इन, विकीपीडिया तथा द वायर हिंदी.कॉम

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

17 वर्षीय अमेरिकी-भारतीय इशान प्रसाद द्वारा हिंदी सीखने हेतु 'मेच इट अप' एप की रचना

17 वर्षीय अमेरिकी-भारतीय इशान प्रसाद ने 'मेच इट अप' हिंदी एप का निर्माण किया। यह एप एक मेचिंग कार्ड खेल है, जिसके अंतर्गत विविध स्तरों की कठिनाइयाँ पाई जाती हैं। इस एप की रचना का मुख्य उद्देश्य यह है कि इशान प्रसाद की भाँति अन्य अमेरिकी-भारतीय बच्चे सरल व मनोरंजक ढंग से हिंदी सीख सकें। इशान का प्रयास यह था कि एक ऐसा खेल समूह बनाया जाए, जिसमें हिंदी सीखने के अलग-अलग पहलू जैसे शब्दावली से लेकर केरेक्टर रिकॉग्निशन और वाक्य-संरचना आदि शामिल हों। एपल इंडीया के आमंत्रण पर इशान ने 5-9 जून, 2017 को सान होज़े, केलिफ़ोर्निया में आयोजित एपल वर्ल्डवाइड डेवलपर्स कॉन्फ़रेन्स में भी भाग लिया।

साभार : द इंडियन एक्सप्रेस.कॉम

गूगल पर भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ और आसान

गूगल ने भारतीय भाषाओं के लिए नए प्रोडक्ट और फ़ीचर्स की घोषणा की। अब से गूगल ट्रांस्लेट गूगल की नई न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन तकनीक का प्रयोग करेगा। इसके तहत अंग्रेज़ी और भारत की 9 भाषाओं - हिंदी, बंगाली, मराठी, तमिल, तेलुगु, गुजराती, पंजाबी, मलयालम और कन्नड के बीच ट्रांस्लेशन की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। न्यूरल ट्रांस्लेशन तकनीक पुरानी तकनीक से कहीं बेहतर काम करेगा। गूगल ने यह भी घोषणा की है कि वह न्यूरल मशीन ट्रांस्लेशन तकनीक को गूगल क्रोम ब्राउज़र में पहले से आने वाले ऑटो ट्रांस्लेट फ़ंक्शन में भी शामिल कराएगा, जिससे भारतीय इंटरनेट पर उपलब्ध किसी भी पेज को भारत की कुल 9 भाषाओं में देख सकेंगे तथा ट्रांस्लेशन सुविधा सभी यूज़र्स के लिए गूगल सर्च और मेप में भी उपलब्ध होगी। यह ट्रांस्लेशन सुविधा डेस्कटॉप और मोबाइल दोनों पर उपलब्ध होगी।

साभार : वैश्विक हिंदी सम्मेलन

फ़्रांस से हिंदी सीखने पहुँचा ह्यूमेनॉय्ड रोबोट

फ़्रांस की राजधानी पेरिस से हिंदी सीखने के लिए पहला फ़्रांसीसी ह्यूमेनॉय्ड रोबोट 'नाओ' उदयपूर आया। पहले से 19 भाषाएँ जाननेवाले 'नाओ' जब हिंदी सीख लेगा, तब दूसरे रोबोट में हिंदी प्रोग्रामिंग के माध्यम से दुनिया में पहुँच सकेगा। टेक्नो इंडिया के निदेशक, श्री आर. एस. व्यास ने बताया कि ह्यूमेनॉय्ड रोबोट का यह 5वाँ संस्करण है तथा वह किसी भी तरह की जानकारी दे सकता है। यह इंटरनेट पर गूगल सहित खास तरह की प्रोग्रामिंग के ज़रिए आवाज़ की खोज करके कार्य करता है और प्रश्नों के उत्तर देता है। श्री व्यास ने बताया कि राजस्थान में यह अपनी तरह का पहला रोबोट है, जो कलडवास के टेक्नो इंडिया एन. जे. आर. इंस्टीट्यूट ऑव टेक्नोलॉजी में पहुँचा है।

श्री विजय कुमार मल्होत्रा की रिपोर्ट

संपादकीय

भाषाई निष्ठा की उदासीन प्रवृत्ति

वैश्विक परिदृश्य में हो रहे लगातार परिवर्तन के अनुरूप हिंदी ने भी अपने भीतर परिवर्तनगामी चरित्र की उद्भावना की है। यह केवल वैचारिक संप्रेषण का माध्यम नहीं वरन् हज़ार वर्षों से लगातार भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की संवाहिका रही है। मानव संस्कृति की सबसे मूल्यवान धरोहर उसकी भाषा होती है। अत: उसकी कीमत पर संसार का कोई भी विकास एवं उपलब्धि स्वीकार्य नहीं हो सकती। किसी समाज को उसकी अपनी भाषा में सोचने एवं जीने के अधिकार से वंचित रखना उसकी अस्मिता को खंडित करना है। भाषाई संस्कार समाज को कुंठित होने से बचाता है, उत्कर्ष प्रदान करता है और सांस्कृतिक सहारे को छीनने से बचाता भी है। संप्रति विश्व बाज़ार ने आम जन की बुनियादी सोच पर ग्रहण लगा दिया है तथा नए मूल्यबोध को लादने की कोशिश अनवरत जारी है। एक ओर हमारी संस्कृति 'नव सामंतवाद' के प्रभुत्व एवं सत्ता की चपेट में आ रही है, तो दूसरी ओर संसार में सूचना, कौशल और पूँजी के शिकंजे में फँसकर आम आदमी पहचान के संकट से जूझ रहा है। वह सिर्फ़ 'उपभोक्ता समाज' के रूप में परिभाषित हो रहा है। वैश्वीकरण के इंद्रजाल से हमें अपनी भाषा, संस्कृति एवं मूल्यों को मुक्त कर अंधानुकरण की प्रवृत्ति से बाहर आना ही होगा एवं परोसी जा रही कृत्रिम संस्कृति को नकारने का साहस भी दिखाना होगा। संसार किसी भी विचारधारा में बहे, लेकिन शाश्वत मूल्यों को खोने की कीमत पर नहीं। यह सच है कि आज पूरी दुनिया मुनाफ़े और ख़ुदगर्ज़ी के बीच बह रही है। पूँजीवादी लहरों में सब कुछ बह जाने का खतरा भी मौजूद है। भाषिक संप्रेषण की प्रकृति का कोई सर्वमान्य सिद्धांत निर्मित नहीं किया जा सकता। भाषा सतत परिवर्तनशीलता की ओर अग्रसर हो रही है। कभी सुचितावादी दुराग्रह एवं संस्कृत गर्भित भाषा के मोह को उतार फेंक भाषाई पगडंडी को राज मार्ग में तब्दील करने के प्रयास भी करने पड़े हैं। अन्य भाषाओं से शब्द-ग्रहण के प्रति कोई परहेज़ न करते हुए कुछ छोड़कर और कुछ जोड़कर ही भाषाएँ आगे बढ़ती रही हैं। इससे उनकी पाचन-शक्ति मज़बूत होती है, लेकिन इसका यह अभिप्राय बिल्कुल नहीं होना चाहिए कि अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो जाए। भाषा को मनमाने एवं उटपटांग ढंग से हाँकने की प्रवृत्ति से बचाना होगा। व्याकरण के नियमों की अवहेलना और किसी तथाकथित 'संप्रभु भाषा' की बैसाखी के सहारे खड़ा करना उस भाषा की स्वाभाविक गरिमा और उसके मौलिक स्वरूप को लहू-लुहान करना होगा। एक वैश्विक संस्कृति एवं 'एक विश्व भाषा' का नारा देनेवाली साम्राज्यवादी शक्तियाँ अपने विजय रथ को सरपट दौड़ाने में लगी हुई है। विश्व बाज़ार के दुर्योधन के प्रति धृतराष्ट्र के मोहासक्त होने से विदुर एवं भीष्म सहित सभी महारथी भाषाई गुंगेपन के शिकार न हो जाएँ। छद्म छवियों के खेल में हम जिस भाषा को गढ़ने में लगे हुए हैं, कहीं वह हमारी सांस्कृतिक अस्मिता के लिए खतरे का संकेत तो नहीं? भाषाई निष्ठा की इस उदासीन प्रवृत्ति का निदान किसी के पास है भी या नहीं, यह शोचनीय विषय है। भाषा एवं संस्कृति के मोहजाल में आम जन को फाँसने का वैश्विक प्रयास अपने चरम पर है। आज शाश्वत जीवन मूल्यों और सदियों के संघर्ष से मिली भाषाई आज़ादी को मटियामेट कर 'वैश्विक जीवन मूल्य' के पाखण्ड को महिमा मंडित करने में संलग्न शक्तियों की पहचान करना अनिवार्य हो गया है। साथ ही साथ भाषाई एवं सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष की चेतना को जाग्रत करने की आवश्यकता भी है। किसी भी भाषा को अभिजात्य का मानक बनने से रोकना होगा। भाषा को क्षेत्र, जाति, धर्म, वर्ग-विभाजन का आधार न बनने दिया जाए।

अंतरराष्ट्रीय बाज़ारवाद की लहर में तथाकथित आभिजात्य की भाषा की मायावी व्यूह-रचना को तोड़ भाषाई निष्ठा को बलवती कर उसकी संरक्षा, सुरक्षा एवं विकास सुनिश्चित करने की दिशा में सतत जागरूक और गतिमान रहना होगा। सांस्कृतिक विकलांगता के दौर में भाषाई विकास एवं उसके प्रति निष्ठा को बरकरार रखना एक बड़ी चुनौती होती है। किंतु जब वर्चस्ववादी एवं आभिजात्यवादी भाषाई संस्कृति अपने पाँव पसार लेगी तब हम सदियों से पोषित अपनी भाषा और संस्कृति की महान विरासत को संभवत: बचा पाने में कहीं असमर्थ न हों जाएँ। यह अनुत्तरित यक्ष प्रश्न हमेशा उत्तर की प्रतीक्षा करता रहेगा। वैश्वीकरण की प्रक्रिया में संबंधित क्षेत्र की भाषाई संस्कृति का वैश्विक जुड़ाव तो वांछनीय है। लेकिन जुड़ने के क्रम में उस क्षेत्र विशेष की भाषाई संस्कृति का लोप हो जाना कहीं से भी जायज़ नहीं। भाषा की ठोस सामाजिक सांस्कृतिक मनोभूमि एवं रचनात्मक वैशिष्ट्य के आलोक में उसके विकास की अनंत संभावनाओं की पड़ताल किए जाने की आवश्यकता है। पराजित मनोवृत्ति किसी भी कौम को भाषा के समक्ष उत्पन्न कठिन चुनौती से मुकाबला करने के लिए खड़ा नहीं कर सकती। अत: अपने भीतर वह भरोसा और आत्म-विश्वास उत्पन्न करना होगा, जो खोया हुआ और आहत भाषाई स्वाभिमान सगर्व वापस ला सके।

प्रो. विनोद कुमार मिश्र
महासचिव

विश्व हिंदी सचिवालय का नया प्रकाशन 'विश्व हिंदी साहित्य' के लिए रचनाएँ आमंत्रित

विश्व हिंदी सचिवालय एक नई वार्षिक पत्रिका 'विश्व हिदी साहित्य' का प्रकाशन आरम्भ करने जा रहा है, जिसमें विश्व भर में रचित विभिन्न गद्य एवं पद्य विधाओं (कहानी, लघु कथा, काव्य, क्षणिका, ग़ज़ल, हाइकु, नाटक, एकांकी, निबंध, संस्मरण, यात्रावृत्तांत, रेखाचित्र, व्यंग्य, रिपोर्ताज, डायरी, साक्षात्कार एवं समीक्षा/आलोचना) को स्थान दिया जाएगा।
सचिवालय के इस प्रारंभिक अंक हेतु विश्व भर के हिंदी रचनाकारों की ओर से रचनाएँ आमंत्रित हैं।

नियम एवं शर्तें :

- प्रत्येक रचनाकार की एक ही रचना स्वीकार की जाएगी।
- रचनाओं की शब्द-संख्या विधाओं के आधार पर स्वीकार्य सीमा की होनी चाहिए।
- प्रत्येक रचना अप्रकाशित (प्रिंट अथवा इलेक्ट्रॉनिक) व मौलिक हो एवं कॉपीराइट से स्वतंत्र हो।
- रचनाकार का संक्षिप्त परिचय, एक पास्पोर्ट आकार फ़ोटो एवं रचना के मौलिक तथा अप्रकाशित होने का प्रमाण-पत्र भी साथ भेजना अनिवार्य है।
- संपादक मंडल द्वारा रचना स्वीकृत होने पर ही पत्रिका में प्रकाशित की जाएगी।
- रचना डाक अथवा इमेल द्वारा भेजी का सकती है।
- अंतिम तिथि **18 अगस्त 2017** होगी।

अधिक जानकारी के लिए फ़ोन, फ़ैक्स अथवा इमेल द्वारा संपर्क करें।

'विश्व हिंदी पत्रिका 2017' के लिए शोध आलेख आमंत्रित

विश्व हिंदी पत्रिका विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस की वार्षिक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका है, जिसमें वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की स्थिति, हिंदी का उद्‌भव और विकास, हिंदी के क्षेत्र में हो रहे अनुसंधान, हिंदी-शिक्षण व अधिगम से संबंधित आवश्यक व मार्गदर्शक शोध प्रकाशित किए जाते हैं। विश्व हिंदी पत्रिका के पूर्व अंक सचिवालय के वेबसाइट www.vishwahindi.com पर उपलब्ध हैं।
पत्रिका के आगामी 9वें अंक में हिंदी भाषा और साहित्य के अतिरिक्त हिंदी और रंगमंच से संबंधित आलेख भी प्रकाशित किए जाएँगे। सचिवालय विश्व भर के हिंदी विद्वानों, शोधार्थियों व हिंदी चिंतकों की ओर से उपर्युक्त विषयों पर आधारित शोध आलेख आमंत्रित कर रहा है।

नियम व शर्तें :

- लेख का शोधपरक होना अनिवार्य है। लेख के विषय ऐसे हों, जो हिंदी के बढ़ते अंतरराष्ट्रीय वर्चस्व से परिचय कराते हों; चाहे वह शिक्षा, साहित्य, संस्था, आंदोलन, योजना-विशेष, सूचना-प्रौद्योगिकी, संचार माध्यम तथा ज्ञान-विज्ञान के किसी भी क्षेत्र में हो।
- लेख लगभग 2500 शब्द-संख्या का होना चाहिए।
- संपादक मंडल द्वारा स्वीकृति मिलने पर ही आलेख प्रकाशित किया जाएगा।
- संपादक मंडल द्वारा लेख स्वीकृत होने की स्थिति में मौलिक तथा अप्रकाशित लेखों के लिए विनम्र मानदेय होगा।
- लेखक का संक्षिप्त परिचय, पास्पोर्ट आकार फ़ोटो एवं लेख के मौलिक तथा अप्रकाशित होने का प्रमाण-पत्र भी साथ भेजना अनिवार्य है।
- अंतिम तिथि **30 अगस्त 2017** होगी।
- आलेख डाक अथवा इ-मेल द्वारा भेजा जा सकता है।

अधिक जानकारी के लिए फ़ोन, फ़ैक्स अथवा इ-मेल द्वारा संपर्क करें।

विश्व हिंदी दिवस 2018 के उपलक्ष्य में आयोजित

अंतरराष्ट्रीय हिंदी एकांकी प्रतियोगिता

प्रतियोगिता को 5 भौगोलिक क्षेत्रों में बाँटा गया है : अफ़्रीका व मध्य पूर्व 2. अमेरिका 3. एशिया व ऑस्ट्रेलिया (भारत के अतिरिक्त) 4. यूरोप 5. भारत
प्रत्येक क्षेत्र के विजेताओं को प्रमाण-पत्र व निम्नलिखित नकद पुरस्कार प्रदान किए जाएँगे :

प्रथम पुरस्कार : 300 **अमेरिकी डॉलर**,
द्वितीय पुरस्कार : 200 **अमेरिकी डॉलर**,
तृतीय पुरस्कार : 100 **अमेरिकी डॉलर**

परिणामों की घोषणा विश्व हिंदी दिवस 2018 के अवसर पर की जाएगी।

नियम व शर्तें :

- प्रत्येक प्रतिभागी से उपर्युक्त विषय पर केवल एक ही प्रविष्टि स्वीकार की जाएगी।
- एकांकी देवनागरी लिपि में स्पष्ट, हस्तलिखित अथवा टंकित होना चाहिए।
- प्रत्येक एकांकी अप्रकाशित (प्रिंट अथवा इलेक्ट्रॉनिक) एवं मौलिक रचना हो तथा कॉपीराइट से स्वतंत्र हो।
- प्रविष्टि पर प्रतिभागी का नाम हस्ताक्षर आदि न हों। प्रतिभागी का नाम, पता, फ़ोन नंबर तथा इ-मेल एक अलग पृष्ठ पर लिखकर संलग्न करना अनिवार्य है।
- लिफ़ाफ़े के ऊपरी बाएँ कोने पर अथवा इ-मेल के विषय के रूप में अंतरराष्ट्रीय हिंदी एकांकी प्रतियोगिताट लिखा होना चाहिए।
- जूरी का निर्णय अंतिम होगा।
- विश्व हिंदी सचिवालय एकांकी को प्रकाशित करने का सर्वाधिकार रखता है।
- प्रविष्टि डाक, इ-मेल अथवा फ़ैक्स द्वारा 15 **अक्टूबर** 2017 तक सचिवालय को प्राप्त हो जानी चाहिए।

पता है : World Hindi Secretariat. Swift Lane, Forest Side 74427, Mauritius.

दूरभाष : (230) 676 1196 **फ़ैक्स :** (230) 676 1224

इ-मेल : publications@vishwahindi.com

प्रधान संपादक :
प्रो. विनोद कुमार मिश्र

संपादक :
डॉ. माधुरी रामधारी

सहायक संपादक :
श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी

संपादकीय टीम :
श्रीमती त्रिशिला सोमर-आपेगाडु, श्रीमती उषा देवी आकाजिया-राम,
सुश्री जयश्री सिबालक, श्रीमती विजया सरजु

***

विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ़्ट लेन, फ़ॉरेस्ट साइड 74427, मॉरीशस
World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side 74427, Mauritius
फ़ोन/Phone: (230) 676 1196 * फ़ैक्स/Fax: (230) 676 1224
इ-मेल/Email: info@vishwahindi.com
वेबसाइट/Website: www.vishwahindi.com

***

Printed by BAHADOOR PRINTING LTD.
Avenue St. Vincent de Paul-Pailles
Tel: (230) 2081317